नन्दा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

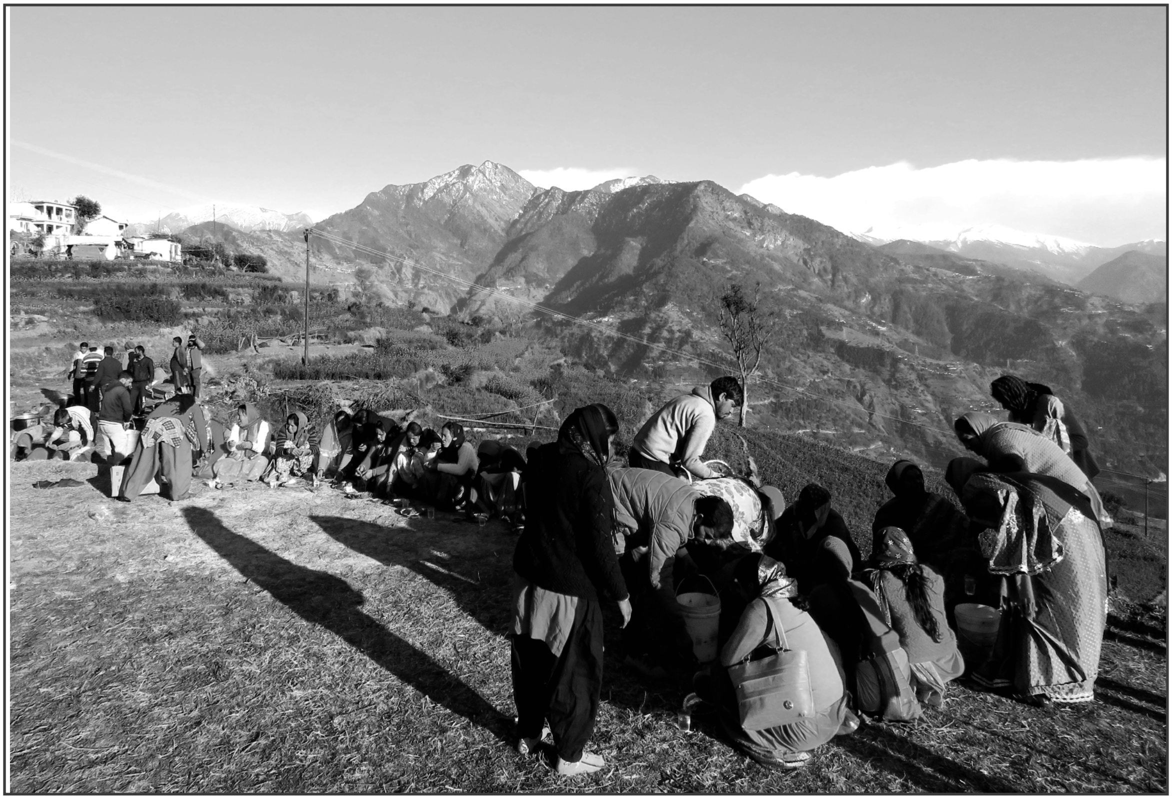

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा

नवम्बर, 2020

वर्ष - 19

अंक-20

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

इस अंक में

क्र.सं.		विवरण	पृष्ठ संख्या
	हमारी बातें	अनुराधा पांडे, अल्मोड़ा	1–5
1.	लॉकडाउन के बीच संगठनों की भूमिका	राजू बिष्ट, गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	6–8
2	कोविड–19 लॉकडाउन का प्रभाव	कमल जोशी, अल्मोड़ा	9–17
3	स्वरोजगार की तैयारी	रचना नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली	18–19
4	संस्कृति	राजीव रावत, ग्राम चौण्डली, जिला चमोली	20
5	सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र	प्रीति रावत, ग्राम जाख, जिला चमोली	21–22
6	आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम	शोभा चौहान, ग्राम जाख, जिला चमोली	23–24
7	वसुधैव कुटुम्बकं	कैलाश पपनै, अल्मोड़ा	25–27
8	जिला पंचायत चुनाव का अनुभव	महानन्द बिष्ट, गोपेश्वर, जिला चमोली	28–30
9	सिलाई	लक्ष्मी नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली	31
10	कोरोना वायरस	प्रवीण रावत, ग्राम चौण्डली, जिला चमोली	32
11	कौशल विकास	रोशनी नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली	33
12	सिलाई बिनाई कार्यक्रम	पीताम्बर गहतोड़ी, पाटी, जिला चम्पावत	34–37

13	सिलाई का अनुभव	संजना नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली	38
14	एक कहानी यह भी	कृष्णानन्द गहतोड़ी, ग्राम–तोली, जिला चम्पावत	39–40
15	कौशल बढाना	सिमरन बिष्ट, ग्राम जाख, जिला चमोली	41–42
16	सिलाई बिनाई प्रशिक्षण दन्या	रमा जोशी, अल्मोड़ा	43–44
17	अपने कौशल बढ़ाना	अंशू डंगवाल, ग्राम जाख, जिला चमोली	45
18	क्षेत्रीय महिला सम्मेलन	पुष्पा पुनेठा, अनिला पंत, दन्या, जिला अल्मोड़ा	46–50
19	सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र	निकिता डंगवाल, ग्राम जाख, जिला चमोली	51
20	महिला संगठन खल्ला	रेखा बिष्ट, ग्राम खल्ला, जिला चमोली	52–53
21	सिलाई प्रशिक्षण	हिमानी चौहान, ग्राम जाख, जिला चमोली	54–55
22	रूद्रनाथ मन्दिर–एक साहसिक यात्रा	सुमन नेगी, गोपेश्वर, जिला चमोली	56–57
23	सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र	वन्दना नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली	58
24	ग्राम शिक्षण केन्द्र	राजेन्द्र बिष्ट, गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	59–60
25	गाँव में काम–काज	लक्ष्मी नेगी, ग्राम चौण्डली, जिला चमोली	61
26	सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र	पल्लवी गैरोला, ग्राम जाख,	62

हमारी बातें

पिछले कुछ वर्षों में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा के मार्गदर्शन में सहयोगी संस्थाओं ने अपने–अपने क्षेत्र में आजीविका संवर्धन के लिये कई अभिनव प्रयास किये हैं। मुख्यतः महिलाओं की आय बढ़ाने के उद्देश्य से किये गये इन कार्यों में सब्जी एवं फल उत्पादन, जल–संचय टैंक एवं सिंचाई, फलदार वृक्षों की नर्सरी और आरोपण, मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, पहाड़ी व्यंजनों का ढ़ाबा, सिलाई–बिनाई केन्द्र, होम–स्टे आदि शामिल हैं। उत्तराखण्ड के पहाड़ी इलाकों में फैले हुए गाँवों में किये जा रहे इन कार्यों से सहयोगी संस्थाओं ने विशेष अनुभव अर्जित किये हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में आय–वृद्धि पर केन्द्रित इन कार्यों की मूल सोच संस्थाओं के इस विश्वास पर आधारित है कि सिर्फ आय बढ़ने से विकास नहीं होता। सामाजिक बदलाव जरूरी है। जब तक समाज का दृष्टिकोण और मानसिकता नहीं बदलेगी तब तक स्त्री–पुरूष असमानता, जातिगत असमानता जैसे कारकों में बदलाव आना मुश्किल है। इस के लिए लगातार गाँवों में जाने, बातचीत करने और समानता की सोच को बढ़ाने के लिये मेहनत जरूरी है। संस्थान के सहयोग से संचालित हो रहे आय–वृद्धि के कार्यक्रमों में जरूरी है कि स्त्रियों की आय बढ़े, लगातार बढ़े। उतना ही जरूरी है कि स्वयं महिलाओं में स्वयं के प्रति सोच और समाज में अन्य लोगों की मानसिकता भी बदले। महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन खुद–ब–खुद नहीं होता। आय बढ़ने के बावजूद जरूरी नहीं कि महिलाओं को पहले से अधिक अवसर मिलें, निर्णय लेने की क्षमता बढ़े, सोच का दायरा बढ़े। इस के लिए अनुकूल वातावरण बनाना जरूरी है।

उत्तराखण्ड में आय–वृद्धि के अन्य कार्यक्रमों पर एक सरसरी नजर दौड़ाएं तो पता चलता है कि अधिकांश गतिविधियाँ महिलाओं और युवाओं के उत्थान पर केन्द्रित हैं। सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा संचालित किये जा रहे कार्यक्रमों में कृषि–आधारित और गैर–कृषिपरक रोजगार देने वाली गतिविधियाँ शामिल रही हैं। इन रोजगारपरक कार्यक्रमों को संचालित कर रही कुछ संस्थाएं तैयार सामान को स्थानीय बाजार में बेच रही हैं तो कुछ राज्य से बाहर महानगरों में भेज रही हैं। कुछ कार्यक्रमों में सीधे अर्न्तराष्ट्रीय बाजार में बिकने वाला सामान बन रहा है। सभी कार्यक्रमों में रहे–सहे उत्पादों को स्थानीय बाजार, हाट–मेलों, तथा सेमीनारों में भी बेचा जाता है। आय–वृद्धि के महिला–केन्द्रित कार्यक्रमों में विविध गतिविधियाँ शामिल हैं। हस्त–निर्मित बुनाई (गलीचे, दरी, शॉल, ट्वीड आदि) बिनाई (स्वेटर, मफलर, दस्ताने, मोजे, टी–कोजी आदि) सिलाई (विशेषकर महिलाओं एवं बच्चों के कपड़े, पुरूषों के लिए जैकेट आदि) डेयरी, फल एवं अनाजों का प्रसंस्करण, मसाले और उनके

विभिन्न मिश्रण, रिंगाल के उत्पाद, सब्जी एवं फल, जड़ी–बूटी उत्पादन इत्यादि कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। इन गतिविधियों को जरा गहराई से समझने का प्रयास करें तो बारीकियाँ एवं चुनौतियाँ सामने आती हैं।

निश्चित ही आय–वृद्धि कार्यक्रमों से बाजार में पहाड़ी अनाजों, दालों, बीजों और पारंपरिक भोजन की पहचान बढ़ी है। स्वयं ग्रामवासी भी स्थानीय भोजन में पोषण के महत्व को समझे हैं। इस से न केवल स्थानीय उत्पादों का मूल्य बढ़ा है बल्कि महानगरों के निवासी ''पहाड़ी संस्कृति एवं परंपराओं'' से परिचित हो रहे हैं। महानगरों, शहरों और कस्बों में आयोजित हो रहे फूड–फेस्टिवल, मेलों में ''पहाड़ी भोजन'' का बनना और बिकना एक नयी शुरूआत है। इस से वृहद् स्तर पर पहाड़ी उत्पादों को पहचान मिली है।

इस संदर्भ में दो मुद्दों पर गौर करें। पहला प्रश्न तो यही कि ग्रामीण महिला–केन्द्रित कार्यक्रमों का फायदा मूलतः किसे हो रहा है। लाभ का कितना हिस्सा उस ग्रामीण स्त्री के हाथ में जाता है जो उत्पादन का काम कर रही है। फसल उत्पादन का काम तो वह पहले से ही करती आयी है। हाड़–तोड़ मेहनत के वे सभी काम जो महिला होने के नाते पारंपरिक रूप से उस की जिम्मेदारी बन जाते हैं। क्या आय–वृद्धि कार्यक्रमों से ग्रामवासिनी महिला को उसकी मेहनत के सापेक्ष आमदनी हो रही है?इस बात पर विचार किया जाना चाहिए। बिनाई या शॉल/कालीन इत्यादि बनाने के कार्यक्रमों को ही लें। इस सामान का जो दाम स्थानीय बाजार में है उस से कई गुना दामों में यही उत्पाद पर्यटन–उन्मुख शहरों/कस्बों में बिकता है। राज्य से बाहर जितनी दूर हस्त–निर्मित चीजें जाती हैं उसी अनुपात में उनका दाम बढ़ता जाता है। इस सबके बीच यह देखें कि उद्यम कर रही महिला की आमदनी भी इसी अनुपात में बढ़ती है या नहीं। तैयार किये जाने वाले सामान का डिजाइन, रंग, ग्रेडिंग और बाजार तक पहुँचाने का काम सरकारी और गैर–सरकारी ''विशेषज्ञ'' करते हैं। उत्पादकों से ग्राहकों के बीच यह जो कड़ी बनी है, इस में काफी धनराशि खर्च होती है। माना जाता है कि ग्रामीण स्त्री–पुरूष उत्पादों की मार्केटिंग, बेचने का काम नहीं कर सकते। इस कारण लाभांश के मामले में वे सदा सब से नीचे की कड़ी बने रहते हैं।

दूसरा बिंदु जो उपरोक्त पहले प्रश्न से ही जुड़ा हुआ है वह सामाजिक समानता और महिला सशक्तिकरण के उद्देश्यों से उभरता है। चूँकि अधिकतम आय–वृद्धि कार्यक्रमों का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण और सामाजिक बदलाव रहता है, इस वजह से यह मुद्दा अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आय–वृद्धि कार्यक्रमों का संचालन करने वाली अधिकतर संस्थाएं इस उद्देश्य से काम करती हैं कि सामान की बिकवाली से होने वाली आय का उपयोग साथियों को वेतन देने,

कच्चे माल की खरीद, औजार/मशीनों की देखभाल, किराया आदि देने में किया जा सकेगा। कुछ कार्यक्रमों का उद्देश्य यह भी है कि लाभांश का उपयोग संस्था द्वारा किये जा रहे अन्य कार्यों जैसे स्कूल, बालिका–छात्रवृत्ति, पुस्तकालय इत्यादि गतिविधियों में होगा। इस से कामगारों और प्रबंधन टीम में लगातार दबाव बना रहता है कि वे उच्च गुणवत्ता का सामान कम से कम समय में तैयार करें। कई कार्यक्रमों में काम के आधार पर पैसा दिया जाता है। जैसे सामान जितना अधिक और गुणवत्तापूर्ण होगा, उसी अनुपात में महिला की आय भी होगी। चूँकि हर कोई समय का पूरा उपयोग करते हुए अधिक से अधिक आय अर्जित करना चाहता है, आपस में गहरी दोस्ती भरी बातचीत करने के अवसर खुद–ब–खुद सिमट जाते हैं।

व्यवसायिक दृष्टिकोण से संचालित होने वाले आय–वृद्धि कार्यक्रमों में प्रशिक्षण लेने और सामान की गुणवत्ता बढ़ाने की व्यवस्था रहती है। कामगारों के समूह में कुछ स्त्रियाँ अन्य साथियों से अधिक समय और गुणवत्ता देती हैं। इन चुनी हुई स्त्रियों के बार–बार प्रशिक्षण से काम निखरता जाता है। इस प्रकार कुछ सिद्धहस्त स्त्रियों की एक टोली बनती है जो आय–वृद्धि कार्यक्रमों की रीढ़ है। यह टोली मेलों, सेमीनार इत्यादि में सामान को बेचने की जिम्मेदारी उठाने में सक्षम है। निश्चित ही, इस स्तर तक पहुँचने वाली स्त्रियों में सामाजिक बदलाव के साथ–साथ आर्थिक उत्थान भी दिखाई देता है।

आय–वृद्धि कार्यक्रमों से सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया के अन्य पक्षों को समझें। सिलाई–बिनाई कार्यक्रमों को उदाहरणस्वरूप लेते हुए इस प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया जा सकता है। हस्त–निर्मित परिधान जैसे स्वेटर, जैकेट, शॉल, मफलर इत्यादि के रंग और डिजायन शहरी क्षेत्रों के लिए भिन्न होंगे। ग्रामीण इलाकों में पसंद किये जाने वाले रंग अलग होंगे। इस वजह से कार्यदायी संस्थाएं स्वयं रंग, डिजायन आदि चुन कर महिलाओं को देती हैं। इस आशा के साथ कि वे दिये गये डिजायन की हूबहू नकल कर सकेंगी। दिये गये काम में बिना कोई स्वैच्छिक बदलाव के जो कामगार स्त्री जितनी अच्छी प्रतिलिपि तैयार करेगी, उस की आमदनी उसी अनुपात में बढ़ेगी। इस प्रक्रिया में खुद की नयी डिजायन सोचने और बनाने के अवसर अत्यंत सीमित हैं। संपूर्ण प्रक्रिया में यही सोच निहित है कि आमदनी बढ़ने से स्वयं स्त्रियों तथा उन के समाज में स्वतः ही बदलाव आता रहेगा।

इस प्रक्रिया का दीर्घकालिक असर देखा जा सकता है। रंग, डिजायन आदि की नकल कर के प्रतिलिपि तैयार कर लेने से न तो महिला की स्वयं की सोच में विस्तार आयेगा, न ही समाज का दृष्टिकोण बदलेगा। आमदनी तो बढ़ेगी लेकिन मानसिकता में बदलाव आये, यह जरूरी नहीं। आय–वृद्धि कार्यक्रमों में ऐसी अनेक महिलाएं शामिल हैं जिनकी आमदनी से घर–परिवार की जरूरतें पूरी हो रही है। इन से बातचीत करने पर पता चलता है कि वे खर्च

तो वहन कर रही हैं पर संपूर्ण व्यवस्था में स्वयं को त्यागशील ममतामयी स्त्री की छवि में समेटे रखती हैं। व्यवस्था को समझना, उस पर प्रश्न करने और स्वयं निर्णय लेने जैसी संभावनाओं पर विचार नहीं करतीं। इस प्रकार सामाजिक बदलाव से जुड़े प्रश्न जैसे स्त्री–पुरूष समानता, जातिगत समानता आदि हाशिए पर ही रहते हैं। निश्चित ही, इस से सामाजिक बदलाव की गति धीमी होती है। उत्तराखण्ड महिला परिषद् का मानना है कि सामाजिक बदलाव के लिए उतने ही काम किये जाने जरूरी है, जितने आर्थिक उत्थान के लिए होते हैं। खास कर जब संचालन करने वाली संस्थाओं का उद्देश्य आर्थिक सुधार के साथ–साथ समाज में बदलाव लाना है।

सामाजिक बदलाव के लिये संस्थाओं और सरकार को निरंतर गाँवों में जाने, सभी से बातचीत करने, महिलाओं, युवाओं और किशोरियों की व्यक्तिगत और सामुहिक समस्याओं को जानने–समझने की जरूरत है। इस से स्त्रियों को बल मिलेगा, आत्म–सम्मान बढ़ेगा और स्वयं तथा परिवेश को समझने की ताकत विकसित होगी। सशक्तिकरण तभी संभव है जब समाज में चिंतन–मनन करने, पढ़ने–लिखने का दायरा बढ़ेगा। मानसिकता में बदलाव लाये बिना सशक्तिकरण कैसे होगा?

आय–वृद्धि के कुछ कार्यक्रम जैसे डेयरी, फल–सब्जी प्रस्संकरण इत्यादि ''घर में ही रोजगार'' देने की आशा बाँधते हैं। यह नारा लुभावना तो है पर मूलतः ग्रामीण स्त्री की मेहनत पर निर्भर है। जैसे डेयरी परियोजनाओं को ही लें। महिलाएं घास–चारे की व्यवस्था, जानवरों की देखभाल के सभी काम (चारा–पानी देना, गौशाला की सफाई, जानवरों को अंदर–बाहर बाँधना, नहलाना इत्यादि) करती हैं। चूँकि ये सभी काम पारंपरिक तौर पर स्त्रियों की जिम्मेदारी माने जाते हैं, इन का कोई मूल्य नहीं आंका जाता।

सामाजिक बदलाव की दृष्टि से उपरोक्त मुद्दों पर चिंतन और शोध होना जरूरी है। दुर्भाग्यवश उत्तराखण्ड में इस तरह की शोधपूर्ण जानकारी और साहित्य का अभाव दिखाई देता है। इस तरह के शोध कार्य उपलब्ध होने से आय–वृद्धि कार्यक्रमों से हो रहे बदलावों को समझने में मदद मिलेगी। आर्थिक–सामाजिक बदलाव हर गाँव में एक सा नहीं होता। आय के समान स्रोत होने के बावजूद गाँव की स्थिति (सड़क, बाजार से दूरी आदि) ग्रामवासियों की आर्थिकी, शिक्षा का स्तर, इच्छाओं और आशाओं के अनुसार बदलाव की गति भी भिन्न–भिन्न होती है।

गाँव में सामाजिक बदलाव बाहर से आने वाली सोच, योजनाओं तथा सुविधाओं से उपजता है तो गाँव के भीतर लोगों के बीच में से भी आता है। ग्रामवासियों की जीवन–शैली में बाहर से आ रही योजनाओं जैसे सड़क, मोबाइल फोन, टीवी इत्यादि का असर हुआ है। गाँव

के भीतर, खासकर, युवाओं और स्त्रियों की, सोच भी बदल रही है। आय–वृद्धि कार्यक्रमों से कुछ स्त्रियों के हुनर बढ़े हैं, आशा–आकांक्षाएं भी बदली है। तथापि, इस लेख का सार यही कि आर्थिक सुधार के साथ–साथ सामाजिक बदलाव को महत्व दिया जाना जरूरी है। यह मान लेना ठीक नहीं कि आमदनी होने से स्त्री की दशा में स्वयं बदलाव आ जायेगा। दूसरा अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है कि उद्यम कर रही ग्रामवासिनी की आय उस की मेहनत के अनुपात में बढ़े तो ही आय–वृद्धि कार्यक्रमों का औचित्य समझ में आता है।

इस अंक में संस्थान के सहयोग से संचालित हो रही सिलाई–बिनाई की गतिविधियों से संबंधित कुछ लेख प्रकाशित किये हैं। साथ ही, कई साथियों ने कोरोना वायरस–जनित महामारी के बारे में अनुभव लिखे हैं।

अगले अंक तक के लिये शुभकामनाएं

अनुराधा पाण्डे

लॉकडाउन के बीच संगठनों की भूमिका

राजू बिष्ट

दुनिया में अलग–अलग देश समय–समय पर कई तरह की प्राकृतिक आपदाओं एवं महामारियों से जूझते रहे हैं। इन आपदाओं और महामारियों से मानव जाति को बचाने के प्रयास भी लगातार होते रहे हैं। इनमें से अनेक प्रयास सफल भी रहे हैं।

कोरोना वायरस, कोविड–19 महामारी, एक ऐसी समस्या है जिसने वर्ष 2020 में पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया। इसकी रोकथाम व बचाव को लेकर प्रत्येक देश ने अपने स्तर पर प्रयास किये हैं। भारत में भी इसके संक्रमण को रोकने के लिए 24 मार्च 2020 से लॉकडाउन करने का निर्णय लिया गया। यह बंद कई चरणों में लागू रहा। इस दौरान पूरे देश में आर्थिक–सामाजिक गतिविधियों में ठहराव सा आ गया। व्यापक स्तर पर लोगों का शहरों से गाँवों की ओर पलायन शुरू हुआ। सरकार की ओर से समय–समय पर इस महामारी से बचाव के लिए दिशा–निर्देश जारी किये गये। संक्रमण के खतरे को कम करने के लिए आपस में दूरी, साफ–सफाई, हाथों को बार–बार धोने, मास्क पहनने, जब तक जरूरी न हो घरों से बाहर न निकलने इत्यादि आदतों पर विशेष जोर दिया गया।

भूकम्प, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं के बाद स्पष्ट रूप में राहत कार्यों में जोर दिया जाता है लेकिन इस महामारी को लेकर स्पष्टता नहीं होने से लोग तरह–तरह की अफवाहों में घिरे रहे। सबसे ज्यादा दिक्कतों का सामना उन प्रवासियों को करना पड़ा जो रोजगार खत्म होने के बाद गाँवों में वापस आये। जहाँ एक ओर क्वारंटीन को लेकर स्पष्टता नहीं थी वहीं अपने ही लोगों के बीच तिरस्कार जैसी घटनाएं भी सुनाई दीं।

इस समय गणाई गंगोली, जिला पिथौरागढ़, के क्षेत्र में हमारी संस्था के सामने भी चुनौती थी कि लोगों की मदद के लिए क्या काम किया जाये। सभी का ध्यान लोगों को राहत पहुँचाने पर था। गाँवों में लोगों को राशन व जरूरत का अन्य सामान उपलब्ध कराने पर जोर दिया जा रहा था। हमारी समझ से इस समय की मुख्य जरूरत थी लोगों को सही जानकारी उपलब्ध कराना। आपसी सौहार्द बनाये रखना और प्रवासियों को सहयोग करके सही तरीके से क्वारंटाइन सुनिश्चित करना। इस परिस्थिति को देखते हुए हमने तय किया कि इस विषय में ग्राम संगठनों के साथ चर्चा की जाये। इस दिशा में क्या काम किया जा सकता है इस पर विचार हो। आपसी चर्चा के बाद तय किया गया कि महिला परिषद् की ओर से एक जागरूकता पोस्टर तैयार कर के लोगों तक पहुँचाया जाये।

1 अप्रैल 2020 को परिषद् की ओर से पोस्टर तैयार कर के सभी महिला संगठनों और आम लोगों तक पहुँचाया गया। सभी सार्वजनिक स्थलों पर पोस्टर चिपकाये गये। महिला परिषद् की ओर से किया गया यह प्रयास लोगों को इस दिशा में सोचने के लिए प्रेरणा देने का एक सशक्त माध्यम बना। इसके बाद कई जन–प्रतिनिधियों और ग्राम संगठनों ने अपने स्तर पर इस समस्या के समाधान के लिए कार्य शुरू किये। इस दौरान शहरों से गाँवों की ओर लोगों की वापसी का क्रम जारी रहा। सरकार की ओर से सटीक व्यवस्था न होने के कारण क्वारंटीन करने में बड़ी समस्या आयी। न ही ग्राम प्रधानों के पास अनुकूल बजट था, न ही गाँवों में ऐसी सुविधाएं थीं कि लोगों को स्कूलों या पंचायत घरों में रखा जा सके। कहीं बिजली नहीं तो कहीं पानी की समस्या थी। शौचालयों की सुविधा न होने से लोगों को बड़ी दिक्कतें आयीं।

उन गाँवों में अच्छा सहयोग देखने को मिला जहाँ पर महिला संगठन काम कर रहे हैं। महिला संगठनों ने इन परिस्थितियों से निपटने के लिए ग्राम–प्रधानों के साथ मिलकर और स्वयं अपने स्तर से भी व्यापक सहयोग दिया। इस दौरान महिला संगठनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई महिला संगठनों ने स्वयं मास्क तैयार कर के लोगों में वितरित किये। लोगों को क्वारंटाइन करने, उन्हें आवश्यक जरूरत का सामान उपलब्ध कराने में सहयोग दिया। रूंगड़ी व ढिगारकोली महिला संगठनों द्वारा बाहर से आये लोगों के लिए अपने गाँव में चार क्वारंटीन सेंटर बनाये गये। इस में महिला परिषद् की संयोजिका द्वारा अपना घर भी लोगों की व्यवस्था हेतु उपलब्ध कराया गया। इसके साथ ही पानी, भोजन, बिजली आदि की व्यवस्था करने में संगठन की सदस्याओं द्वारा सहयोग दिया गया। गाँव के कई युवाओं ने नगद पैसा जमा किया ताकि लोगों के लिए उचित व्यवस्था हो सके।

ग्वाड़ी महिला संगठन और ग्राम–प्रधान द्वारा चार सौ मास्क तैयार कर के अपने गाँव के हर घर में वितरित किये गये। साथ ही लोगों को आपसी–सहयोग व सफाई के लिए जागरूक करने का कार्य किया। बाहर से आये लोगों के रहने–खाने के लिए व्यवस्था करने का काम किया। महिला संगठन फडियाली ने गाँव के युवाओं व ग्राम–प्रधान के साथ मिलकर प्रवासियों के रहने, उनके सामुहिक भोजन आदि की व्यवस्था की। ग्राम–प्रधान ने संगठन के साथ मिलकर अपने गाँव में लोगों के घर–घर जाकर इस वायरस से बचाव के बारे में जानकारी दी। साथ ही गाँव के सार्वजनिक स्थलों पर परिषद् की ओर से तैयार जागरूकता पोस्टर चस्पा किये ताकि लोग सही जानकारी प्राप्त कर सकें। इसके साथ ही जन–सहयोग से क्वारंटीन सेंटर को समय–समय पर सेनेटाइज करने का कार्य किया।

इस दौरान जन–सहयोग से मास्क निर्माण के लिए सामग्री जुटाई गई। इस सामग्री

से महिला संगठन भनोलीसेरा की सदस्याओं द्वारा तीन सौ मास्क तैयार कर के उपलब्ध कराये। इन का वितरण कोविड चैक पोस्ट, स्थानीय बाजार व सरकार द्वारा गणाई पॉलिटैक्निक में तैयार क्वारंटीन सेंटरों में किया गया। भन्याणी महिला संगठन और किशोरी संगठन की ओर से मास्क तैयार कर के गाँव में वितरित किये गये। संगठन की सदस्याओं ने लगातार लोगों को सफाई के लिए प्रेरित किया।

यह महत्वपूर्ण है कि लोग अपनी समस्याओं के लिए सामुहिक चिंतन कर के उन का हल खोजें। इस पूरे घटनाक्रम में एक मुख्य बात जो देखने को मिली वह यही थी कि जहाँ संगठनात्मक गतिविधियाँ चल रही हैं वहाँ लोगों के बीच अच्छा संवाद और सहयोग दिखाई दिया। बाहर से आये प्रवासियों के लिए महिला संगठनों ने आपसी सहयोग से व्यवस्थाओं को आसान बना दिया।

यह एक बड़ी विडंबना है कि हमारे गाँवों में किसी बड़ी प्राकृतिक आपदा या महामारी से निपटने के लिए कोई तैयारी और व्यवस्था नहीं है। कोविड–19 महामारी के दौरान अनुभव हुआ कि प्रशासन दस–बीस लोगों के लिए अच्छी व्यवस्था करने में सक्षम नहीं था। सरकारों पर अति–निर्भरता के चलते गाँव भी अंदर से खोखले होते जा रहे हैं। हम सभी को इस दिशा में सोचना होगा। सतत् संवाद व चिंतन का ही परिणाम रहा कि कई ग्राम संगठनों ने इस दौरान महत्वपूर्ण काम किये। इस आपदा से यह भी सीख मिली कि आपसी सहयोग जरूरी है। गाँव संगठनात्मक रूप से मजबूत हों, ऐसे प्रयास होने जरूरी हैं। यह सोचना जरूरी है कि इस महामारी के दौर में गाँव कहाँ पर खड़े हैं।

कोविड–19 लॉकडाउन का प्रभाव

कमल जोशी

यह अध्ययन केवल गाँवों में कोविड–19 के प्रभाव को सरसरी तौर पर समझने का प्रयास है। यह अध्ययन उत्तराखण्ड के पाँच जनपदों– अल्मोड़ा, बागेश्वर, चमोली, चम्पावत और पिथौरागढ़ में स्थित सात ग्राम–समूहों के कुल अठावन गाँवों/तोकों में लोगों की राय के आधार पर किया गया है। इसके लिये तैयार प्रश्नावली को उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान की सहयोगी संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं और ग्राम शिक्षण केन्द्र की संचालिकाओं द्वारा अप्रैल से जुलाई 2020 के दौरान सम्बन्धित गाँवों के निवासियों के साथ बातचीत (ज्यादातर प्रत्यक्ष और कुछ में फोन द्वारा) तथा गाँव की दशा को देख–सुनकर भरा गया है। नीचे दी गयी तालिका में उन गाँवों और जिलों के नाम दिये गये हैं, जहाँ प्रश्नावली के आधार पर जानकारी भरी गयी। यह सभी कार्य कोरोना के असर को समझने के लिए किया गया। इस के कोई राजनीतिक अर्थ न निकाले जायें।

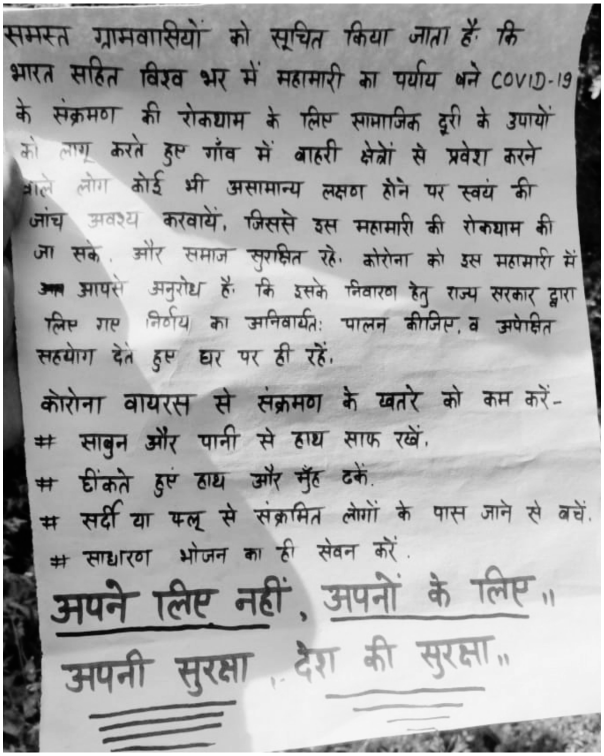

कार्यक्षेत्र	गाँवों की संख्या और नाम
मैचून (वि.ख. धौलादेवी, अल्मोड़ा)	खोला, मनिआगर, मौनी, बानठौक (4)
दन्यां (वि.ख. धौलादेवी, अल्मोड़ा)	गौली, मुनौली, टकोली, डसीली, धारागाड़, बसाण, कोट्यूड़ा (7)
शामा (वि.ख. कपकोट, बागेश्वर)	नामिक, तल्ला नामिक, मल्ला धारी, गोगिना, हिनारी, मलखा ढुगर्चा (6)
गणाई–गंगोली (वि.ख. गंगोलीहाट, पिथौरागढ़)	भालूगाड़ा, फडियाली, भन्याणी, ग्वाड़ी (4)
पाटी (वि.ख. पाटी, चम्पावत)	तोली, पम्तोला, रौलमेल, जनकांडे, मल्ला कमलेख, मारागाँव, लधौन, कड़वालगाँव, धूनाघाट, गरसाड़ी, जेरोली, गूम, लखनपुर, बिसारी, भट्यूणा (15)
कर्णप्रयाग (वि.ख. कर्णप्रयाग, चमोली)	पुडियाणी, कफलोड़ी, सुनारग्वाड़, चौण्डली, जख, सुन्दर गाँव, बैनाली, छातोली, कुकड़ई, बधाणी (10)
गोपेश्वर (वि.ख. दशौली, चमोली)	सरोली, दशोली, देवलधार, मण्डल, खल्ला, ग्वाड़, कोटेश्वर, कठूड़, दोगड़ी–कांडई, बमियाला, बणद्वारा, कांडई (12)
	कुल गाँवों की संख्या = 58

1. सबसे ज्यादा असर : रोजगार पर सबसे ज्यादा असर पड़ा। गाँव के बाहर प्राइवेट नौकरी, स्थानीय टैक्सी वाले, दुकानदार, होटल–ढाबे में काम कर रहे लोग और मजदूर–इनका रोजगार प्रभावित हुआ। अधिकतर ने प्रवासी कामगारों (34 प्रपत्रों में), गाँव/आसपास दुकान, होटल/ढाबे (14 प्रपत्रों में), टैक्सी चालक/मालिक (10 प्रपत्रों में) या मजदूरी (16 प्रपत्रों में) करने वालों पर सबसे ज्यादा असर पड़ने का उल्लेख किया है।

''गाँव में जो प्रभावित (प्रवासी) भाई–बहिन आये हैं उनके सामने रोजगार की संभावनाएं तलाशने में काफी दिक्कत आ रही है और आर्थिक स्थिति खराब हो रही है।'' (बसाण, दन्या), खेतीबाड़ी पर खराब असर का उल्लेख केवल 19 प्रपत्रों में है। ''गाँव में सबसे ज्यादा असर बच्चों की पढ़ाई पर पड़ा'' (कफलोड़ी, कर्णप्रयाग)। ''स्कूल पर सबसे ज्यादा असर हुआ क्योंकि बच्चों के पेपर नहीं हुए और 2–3 महीने से स्कूल बंद है'' (खल्ला, चमोली)। बीमारों और लॉकडाउन के कारण घर से दूर फँसे व्यक्तियों की परेशानी का उल्लेख किया गया है– ''छुआछूत की मानसिकता का पुनर्जन्म हो रहा है'' (तोली, चम्पावत), भय का माहौल (पाटी के अनेक प्रपत्रों में यह सूचना दी गयी है)।

2. आय पर प्रभाव (आजीविका/आर्थिक–क्षेत्र) : व्यवसाय, सेवा–क्षेत्र से जुड़े लोगों की आय पर सबसे ज्यादा प्रभाव दिखा। सबसे ज्यादा प्रपत्रों में टैक्सी संचालन से जुड़े लोगों की आय पर बहुत ज्यादा असर का उल्लेख है। दुकानदारी/ढाबे चलाने वालों की आय पर बहुत ज्यादा असर का उल्लेख 20 प्रपत्रों में तथा थोड़ा असर पड़ने का 12 प्रपत्रों में है। खेतीबाड़ी पर 28 प्रपत्रों में कोई असर नहीं और 7 प्रपत्रों में थोड़ी असर पड़ने का उल्लेख है। खेतीबाड़ी पर ज्यादा असर पड़ने का उल्लेख किसी ने नहीं किया है। लेकिन डेयरी व्यवसाय पर 15 प्रपत्रों में (पाटी, दन्यां, मैचून) बहुत ज्यादा असर और 23 में थोड़ा असर होने का उल्लेख है। व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय पर थोड़ा असर पड़ा। कोटेश्वर में मछली–पालन प्रभावित हुआ।

व्यवसाय	**बहुत ज्यादा असर**	**थोड़ा बहुत अस**	**बिल्कुल असर नहीं**
खेतीबाड़ी	0	7	28
टैक्सी	36	1	0
डेयरी	15	23	4
दुकान/ढाबा आदि	20	12	0

3. इस अवधि में बेरोजगार हुए लोगों ने क्या काम किये?: सबसे ज्यादा (44 प्रपत्रों में) खेतीबाड़ी की तरफ ध्यान दिये जाने का उल्लेख है। मनरेगा में मजदूरी का उल्लेख भी ज्यादा

(18 प्रपत्र) हैं। इसके अलावा गाय, भेड़–बकरी पालने (11 प्रपत्र) अपने घर की मरम्मत और गाँव की साफ–सफाई का काम (8–8 प्रपत्रों में उल्लेख) आदि काम भी किये।

4. आवश्यक वस्तुओं/सेवाओं की आपूर्ति/उपलब्धता पर असर : अनाज की कमी नहीं हुई। ईंधन–गैस की आपूर्ति पर असर भी बहुत कम दिखा। एक तो ज्यादातर जगहों में एलपीजी की आपूर्ति बाधित नहीं हुई या ग्रामीणों ने फोन करके मंगवा ली। है। जहाँ तक सब्जी की बात है सबसे ज्यादा प्रपत्रों में थोड़ा बहुत असर होने का उल्लेख है क्योंकि गाँव में उगने वाली सब्जियों से काम चल गया। स्वास्थ्य/चिकित्सा सेवाओं पर मिलाजुला असर पड़ा। यातायात के साधनों का उल्लेख तो 18 प्रपत्रों में ही नाई, मोची, हार्डवेयर की कमी का बहुत असर पड़ने का जिक्र है।

वस्तु/सेवा	बहुत ज्यादा असर	थोड़ा बहुत असर	बिल्कुल असर नहीं
अनाज/राशन	2	16	40
सब्जी/फल	8	41	8
एल.पी.जी.	3	10	42
स्वास्थ्य/चिकित्सा	24	18	15
यातायात	18	0	0

समाधान : सबसे ज्यादा लोग अपनी खेतीबाड़ी पर ध्यान दे रहे हैं (20 प्रपत्र)। उपभोग में कमी की और घर/गाँव में उपलब्ध सब्जियाँ से काम चलाया। यातायात बाधित होने के कारण आवश्यक यात्रायें ही की (बुकिंग पर वाहन) और बाजार से इकट्ठा सामान खरीदा (11 प्रपत्र)। अतिआवश्यक दवाइयाँ पुलिस की सहायता से मंगाई लेकिन साथ ही घरेलू दवाइयों के उपयोग और स्वास्थ्य–जागरूकता का उल्लेख भी (3–3 प्रपत्र) है। पाटी क्षेत्र में निजी मोटर वाहन खरीदे गये।

5. शराब की आपूर्ति : जब तक आपूर्ति बंद रही गाँवों में पारिवारिक/सामाजिक माहौल शांतिपूर्ण और अच्छा रहा (41 प्रपत्रों में उल्लेख), लेकिन कालाबाजारी भी बढ़ी (13 प्रपत्र)। कुछ गाँवों में शराब पहले से बंद थी (5 प्रपत्र)। लेकिन शराब की आपूर्ति शुरू होते ही गाँव का माहौल पहले जैसा हो गया।

6. गाँव में उत्पादित चीजों की बिक्री पर असर : स्थानीय भोजनालय, चाय की दुकानें बंद होने के कारण और कस्बों–शहरों तक यातायात उपलब्ध नहीं होने के कारण दूध (25 प्रपत्रों में बहुत ज्यादा, 14 में थोड़ा बहुत असर होने का जिक्र) और सब्जियों (16 में बहुत ज्यादा और 12 में थोड़ा बहुत असर होने का जिक्र) को बेचने में कठिनाई हुई। दशौली क्षेत्र (चमोली) में दूध बाजार में बेचने की समस्या का हल पास बनाकर और पैदल रास्तों से बाजार जाकर निकाला। हस्त–शिल्प उत्पादों को बेचने में बहुत ज्यादा असर का उल्लेख 5 प्रपत्रों (शामा और गोपेश्वर क्षेत्र) में है। पाटी क्षेत्र में आड़ू, प्लम आदि फल बर्बाद हो गये।

समाधान : कुछ दिन तक दूध का घी बना लिया (4 प्रपत्र) बाद में पैदल बाजार ले जाकर बेचा। सब्जियाँ स्वयं उपयोग की और गाँव में बांटी/बेचीं (28 प्रपत्र)। उपज (फल/सब्जियाँ) बर्बाद भी हो गयी (6 प्रपत्र)।

7. लॉकडाउन शुरू होने के बाद कितने लोग गाँव वापस लौट कर आये : कुल मिलाकर 1521 प्रवासी वापस गाँव आये हैं जिनमें से 245 वापस चले गये या जाने वाले हैं। शामा गोगिना (151) और मलखा ढुगर्चा (200), कर्णप्रयाग के जाख (110), मैचून क्षेत्र के मनिआगर (130), पाटी के गरसाड़ी (110), दन्यां के टकोली (45) और डसीली (50) में अपेक्षाकृत अधिक संख्या में प्रवासी आये। अन्य में से भी अधिकतर परिस्थिति सामान्य होने के बाद वापस जाने के इच्छुक हैं (29 प्रपत्र) जबकि कुछ खेतीबाड़ी (16 प्रपत्र)। गाँव में अन्य व्यवसाय (10 प्रपत्र) करना चाह रहे थे। कई (11 प्रपत्र) दुविधा और चिंता में हैं कि क्या काम करेंगे और कहाँ। ज्यादातर प्राइवेट कम्पनी (44 प्रपत्र), फैक्ट्री, होटल–ढाबे आदि (37 प्रपत्र) में कार्यरत थे। कुछ छात्र भी हैं (15 प्रपत्र) प्रदेश के बड़े शहरों में पढ़ रहे हैं। (लौट कर आये तथा इनमें से गाँव में ही रोजगार करने का निश्चय कर चुके लोगों की संख्या पता लगाने के लिये इस प्रश्न को फिर से पूछने/अपडेट की जरूरत है)।

8. गाँव में सामाजिक प्रभाव : ज्यादातर शादियाँ स्थगित हुई, कुछ सादगीपूर्वक सम्पन्न हुई। गाँव में किसी की मृत्यु होने पर बहुत कम लोग अंतिम संस्कार में शामिल हुए। ज्यादातर परिवारों ने लॉकडाउन के नियमों का स्वयं पालन किया। (गाँव में सामाजिक काम–काज रूक गये– 35 प्रपत्र, सीमित संख्या में लोग शामिल हुए–37 प्रपत्र)

- ''अब ज्यादातर लोग शुभ–अशुभ कामकाजों में जाने से घबरा रहे हैं'' (नामिक, बागेश्वर)। ''गाँव में होने वाले भागवत भी रूक गये'' (गोगिना)।
- ''गाँव में सामाजिक प्रभाव बहुत ज्यादा दिखा, लगभग 6 शादियाँ रूक गयी हैं...'' (कफलोड़ी) तथा ''गाँव में जो भी सामाजिक समारोह हुए उनमें परिवारों को आर्थिक लाभ देखने को मिला'' (चौण्डली)। ''शादी में अब वह रौनक नहीं रही'' (कुकड़ई)।
- शादियाँ धूम–धड़ाके से नहीं हुईं (डसीली, दन्या)।
- गाँव के लोगों ने शादियाँ दिसम्बर 2020 में करने का फैसला लिया है (खोला, मैचून)।
- माँ भगवती अनुसूया का यज्ञ रूक गया (मण्डल, चमोली)।
- एक बच्चे का मुंडन हुआ था लेकिन उसके परिवार के अलावा अन्य कोई शामिल नहीं हुआ (ग्वाड़, चमोली)।
- गाँव में तीन शादियाँ हुईं। सिर्फ दस लोग शामिल हुए (तोली, पाटी)।

9. शिक्षण केन्द्र बंद होने का प्रभाव : बच्चों पर बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ने का उल्लेख 41 प्रपत्रों में, महिलाओं पर तथा किशोरियों पर बहुत ज्यादा प्रभाव का उल्लेख क्रमशः 12 और 15 प्रपत्रों में है। स्कूल भी बंद होने के कारण बच्चे पढ़ने–लिखने, खेल–कूद आदि की गतिविधियों के अभाव में इधर–उधर घूमते हैं और घर के भीतर/बाहर शरारतें करते हैं जिनसे अभिभावक भी परेशान हैं। कुछ ने उल्लेख किया है कि बच्चों के घर पर होने के कारण महिलाएं परेशान हैं

- शामा, बागेश्वर : ''बच्चे घरों में कैद हो गये हैं जिस कारण उनके ऊपर मानसिक तनाव हावी हो रहा है....'' (नामिक)। ''ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई नहीं कर पाए ओर केन्द्र बंद होने के बाद उनकी पढ़ाई ही रूक गयी'' (मलखा दुगर्चा)।
- कर्णप्रयाग, चमोली : ''स्कूल बंद होने के कारण पढ़ाई करने का अच्छा साधन शिक्षण केन्द्र था जहाँ आकर बच्चे अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी कर रहे थे'' (कुकड़ई)। ''भटकाव की स्थिति देखी गयी'' (चौण्डली)।

- गणाई, पिथौरागढ़ : ''बच्चे तो ज्यादा मतलब नहीं रख रहे लेकिन उनसे महिलाएं बहुत परेशान हैं'' (भालूगाड़ा)।
- गोपेश्वर, चमोली : ''शिक्षण केन्द्र बंद होने के कारण बच्चे आपस में लड़ने लगे, पेड़ों पर चढ़ने लगे और गाँव में इधर–उधर भागने लगे'' (मंडल)।

10. लॉकडाउन अवधि में क्या किया : जो शिक्षिकाएं/मार्गदर्शिकाएं कॉलेज में पढ़ रही हैं उन्होंने ऑनलाइन पढ़ाई (11 प्रपत्र) के साथ–साथ घर का काम किया (33 प्रपत्र), सिलाई/बिनाई/कढ़ाई जैसे काम किये और शिक्षण केन्द्र की किताबें पढ़ीं। बाहर से आये प्रवासियों और गाँव में रहने वाले महिला–पुरूषों ने ज्यादातर खेतीबाड़ी का काम किया (54 प्रपत्रों में उल्लेख) और अपने घर की मरम्मत (10 प्रपत्र) गाँव के रास्ते साफ करने, कुरी की झाड़ियाँ काटने जैसे काम (8 प्रपत्र) किये।

11. सरकार द्वारा प्रदान की गयी सहायता : अन्त्योदय/बीपीएल परिवारों को प्रति यूनिट 5 किलो. चावल और 1 किलो. अरहर/चना/मसूर की दाल प्रतिमाह के हिसाब से तीन महीने का राशन मुफ्त दिया गया। एपीएल परिवारों को प्रति कार्ड 15 किलो चावल और 10 किलो. गेहूँ दिया गया। महिला जनधन खाता धारकों के खाते में 500 रुपया मासिक के हिसाब से 3 महीने के 1500 रुपया जमा किये गये। श्रम विभाग द्वारा श्रमिकों के खाते में प्रति परिवार 2000 रुपया जमा किया गये हैं।

इसके अलावा पटवारी/ग्राम प्रधान द्वारा भी कहीं–कहीं जरूरतमंद परिवारों को कपड़े के मास्क, राशन, साबुन, तेल आदि दिया गया। कर्णप्रयाग में 'गूँज' संस्था द्वारा जरूरतमंद परिवारों को राशन किट (5 किलो. चावल, 5 किलो. आटा, साबुन, मसाले आदि) दिये गये। गोगिना–नामिक क्षेत्र में भी एक संस्था 'सज्जनलाल मेमोरियल सोसाइटी बुंगाछिना द्वारा जरूरतमंद परिवारों को 15 किलो. प्रति परिवार तथा 'मुनस्यारी महोत्सव' के कार्यकर्त्ताओं द्वारा 10 किलो. प्रति परिवार राशन दिया गया। स्थानीय विधायक द्वारा भी 15 किलो. राशन प्रति परिवार वितरित किया गया।

उपरोक्त के अलावा पहले से दी जा रही सहायता–किसान सम्मान निधि (4 माह के रुपया 2000), विधवा/वृद्धावस्था/दिव्यांग पेंशन (3 माह के रुपया 3600)। कहीं पर पटवारी/ग्राम प्रधान द्वारा विधवाओं को राशन दिया गया। ग्रामीण परिवारों को मास्क, सेनीटाइजर दिये गये।

लोगों की राय : आम तौर पर सभी क्षेत्रों में लोग सरकार द्वारा दी गयी सहायता से पूर्णतः संतुष्ट और खुश हैं (51 प्रपत्र)। खासकर लॉकडाउन अवधि में राशन की कमी की कोई शिकायत नहीं बतायी गयी। कुछ टिप्पणियाँ :

- पाटी, चम्पावत : ''मोदी की वाहवाही करते हैं'' (तोली), ''ज्यादातर खुश हैं'' (रौलमैल), ''मोदी सरकार ने राशन दिया और गरीबों की बहुत सहायता की'' (मल्ला कमलेख, चम्पावत), ''सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत से खाने–पीने का अभाव नहीं पड़ा। राशन पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हुआ'' (लखनपुर)।
- शामा, बागेश्वर : ''लोग सोचते हैं कि महामारी के समय में सरकार ने उनको खाने पीने का सामान दिया'' (मल्ला धारी, गोगिना), ''लोगों का मानना है कि सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत वास्तव में बहुत अच्छी है।''
- कर्णप्रयाग, चमोली : ''सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत से लोगों को बहुत मदद मिली, राशन सही समय पर पूर्ण रूप से मिली तथा पिछले समय से कुछ ज्यादा मिली'' (कफलोड़ी)। ''अगर सरकार न देती तो हम भूखे ही रहते'' (सुनारग्वाड़)।
- दन्यां, अल्मोड़ा : ''लोग सोचते हैं कि सरकार हमारी सुरक्षा के लिये ही हमें घर में ही रह कर इतनी सुविधा दे रही है, जिसका धन्यवाद अदा करते हैं'' (गौली)।
- मैचून, अल्मोड़ा : ''लोग सोचते हैं कि इस महामारी के समय में बेरोजगार हुए लोगों को सरकार द्वारा मदद करना अच्छी बात है'' (खोला)। ''यह सरकार का एक अच्छा कदम है'' (मौनी)।
- गणाई–गंगोली, पिथौरागढ़ : ''लोगों की सोच सरकार के प्रति सकारात्मक रही'' (भालूगाड़ा)।
- गोपेश्वर / दशौली, चमोली : ''लोग सरकार द्वारा दी गयी राहत के लिए आभार व्यक्त करते हैं'' (मंडल)। ''लोगों का कहना है कि सरकार ने इस बार गरीबों और मजदूरों का भी ध्यान रखा। किसी को राशन, किसी के खाते में पैसे'' (खल्ला)।

केवल 4 प्रपत्रों में संतुष्ट नहीं होने का उल्लेख है। ''कई लोगों का कहना था कि राशन केवल जरूरतमंद लोगों को ही मिलना चाहये'' (भन्याणी, गणाई)। नामिक में लोग ''सरकार को धन्यवाद देते हैं'' लेकिन उनकी अपेक्षा है कि सरकार को गाँव लौटकर आये प्रवासियों के लिए रोजगार की व्यवस्था करनी चाहिये।'' ''पहाड़ों में तो खेतीबाड़ी करके परिवार का गुजारा हो जाता है, जो भूख से मर रहे हैं उन्हें यह राहत मिलनी चाहिये'' (गोगिना) ''गाँव में अपनी खेतीबाड़ी से कमाए अनाज से भरण–पोषण कर सकते हैं। जो राहत गाँव में दे रहे हैं उसे रोजगार के बिना शहर में फंसे उनके बच्चों को दें'' (खल्ला)। ''राहत के

साथ सरकार द्वारा यदि आगे रोजगार के अवसर भी दिये जाते हैं तो उससे उन्हें काम के बदले पैसे मिलेंगे और खाली नहीं बैठे रहेंगे'' (दोगड़ी–कांडई)। ''जो बीपीएल परिवार के लोग हैं उन्हें राहत मिली जो अन्य हैं उनको क्यों नहीं? यह गाँव वालों के साथ भेदभाव है। क्योंकि लॉकडाउन तो सभी को है'' (बमियाला)। ''अगर सरकार द्वारा गाँवों में अच्छी नीतियाँ बनाई जाती हैं तो भविष्य में लोग स्वयं पर निर्भर रहेंगे'' (सरोली, गोपेश्वर)।

12. संस्था कार्यकर्त्ता के तौर पर आप क्या सहयोग कर सकते हैं?: कोविड–19 के संदर्भ में जागरूकता–मास्क/पोस्टर गाँवों में पहुँचाना, प्रवासियों के आने से उत्पन्न भयसंशय को दूर कर के सामाजिक माहौल सुधारने में सहयोग करने का उल्लेख 50 प्रपत्रों में है। 14 प्रपत्रों में मास्क बनाना/वितरण करने की तथा 4 प्रपत्रों में गाँव की सफाई का उल्लेख है। संस्था कार्यकर्त्ताओं द्वारा घर–घर जाकर ग्राम शिक्षण केन्द्र की किताबें पढ़ने को दी गयी।

निष्कर्ष :

1. खेतीबाड़ी पर खराब असर नहीं दिखा, बल्कि एक सकारात्मक प्रभाव यह दिखा कि लॉकडाउन अवधि में गाँव के लोगों और प्रवासियों, दोनों ने खेतीबाड़ी की तरफ ज्यादा ध्यान दिया। लेकिन गाँव में रह कर आसपास कस्बों/शहरों में अन्य व्यवसाय– दुकान, टैक्सी आदि करने वालों तथा गाँव के बाहर रोजगार कर रहे प्रवासी बहुत प्रभावित हुए।

2. आवश्यक वस्तुओं/सेवाओं की उपलब्धता में राशन (अन्न) की कमी कहीं हुई, अन्य चीजों की भी गंभीर समस्या नहीं आयी। यातायात के साधन उपलब्ध न होने का असर सबसे ज्यादा हुआ जो रोजमर्रा की चीजें बाजार से खरीदकर लाने, बीमारों को अस्पताल ले जाने या गाँव में उत्पादित सब्जी, दूध, फल को बेचने में बाधक बना। इसके अलावा कर्णप्रयाग के प्रपत्रों में भवन निर्माण सामग्री न मिलने से निर्माण कार्य प्रभावित होने का जिक्र है।

3. स्कूल और ग्राम शिक्षण केन्द्र बंद होने का बच्चों की पढ़ाई–लिखाई और रूचिकर कामों में व्यस्तता पर बहुत असर हुआ।

4. शराब जितने दिन उपलब्ध नहीं हुई उतने दिन गाँवों का पारिवारिक/सामाजिक माहौल अच्छा/शांत रहा लेकिन शराब की बिक्री बहाल होते ही पुरानी स्थिति आ गयी।

5. शुभ कामकाज ज्यादातर स्थगित हुए और जो हुए उनमें सादगी रही। अशुभ कामों में भी सरकार के निर्देशों का पालन किया।

6. सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत से प्रायः सभी गाँव में लोग बहुत संतुष्ट और खुश दिखे।

स्वरोजगार की तैयारी

रचना नेगी

केन्द्र में शुरूआती दिनों में हमने कपड़े पर काज बनाना सीखा। चार दिन तक इस कार्य को दोहराया। यह कार्य सीखने के बाद हमने तुरपन करना सीखा। उसके बाद मास्टर जी ने हमें मशीन को खोलना, जोड़ना सिखाया। उसके बाद कागज पर मास्क की कटिंग करवायी। इस काम को दो दिन तक पूर्णरूप से किया, फिर मशीन पर सिलाई की। यह मास्क बहुत सुन्दर दिखाई दे रहा था। तत्पश्चात् कपड़े पर मास्क की कटिंग की और चार दिन तक इसी पर कार्य किया। मास्टर जी ने मास्क को मशीन पर सिलना सिखाया। पूरे एक सप्ताह तक मास्क बनाने पर कार्य किया। जब मास्क बनाने में सक्षम हुए तो मैंने घर पर भी बहुत से मास्क बनाये। ग्रामवासियों को भी वितरित किये।

काज बनाने, मास्क तथा तुरपन का काम पूर्ण रूप से आने के बाद हमने पैडल वाली मशीन को चलाना सीखा। मैं तीन दिन में धीरे–धीरे पैडल की मशीन चलाना सीख गयी। तत्पश्चात् प्लाजो की कटिंग पेपर पर की। पहले दिन तो मुझे प्लाजो की कटिंग समझ में नहीं आयी। जब चार दिन तक पेपर पर वही कार्य किया तो कटिंग समझ में आ गयी। तब हमने घर में भी इसी कार्य का अभ्यास किया। धीरे–धीरे पूर्णरूप से यह काम समझ में आ गया। उसके बाद मास्टर जी ने कपड़े पर कटिंग करवाई। कपड़े पर कटिंग करने में हमें ज्यादा परेशानी नहीं हुई। प्लाजो की सिलाई का अभ्यास किया। मैंने स्वयं एक ही दिन में प्लाजो को सिलना सीख लिया। मैंने पाँच प्लाजो अपने लिए घर में बनाये।

उसके बाद एक दिन हमने मास्टर जी से चर्चा की। हमने उनसे पूछा कि क्या हम सिलाई केन्द्र में दो ग्रुप बनाकर आपस में एक प्रतियोगिता कर सकते हैं। चर्चा का बिंदु होगा कि हमने क्या–क्या सीखा और कैसे सीखा। मास्टर जी को यह विचार अच्छा लगा। उन्होंने यह भी बताया कि संस्था के कार्यकर्त्ता भी आने वाले हैं। वे भी हमें कुछ नयी बातें बतायेंगे।

अगले दिन लक्ष्मी दीदी ने हमें एक खेल करना सिखाया। उन्होंने हमें एक कागज दिया। कहा कि उसमें अपनी दस अच्छाइयाँ तथा दस बुराइयाँ लिखनी हैं। उसी के साथ एक प्रश्न भी लिखना है। वे उस प्रश्न का जवाब देंगी लेकिन प्रश्न सिलाई केन्द्र या गाँव के बारे में होना चाहिए। उसके बाद सभी लोगों की अच्छाई व बुराई सुनी और प्रश्न भी सुने। लक्ष्मी दीदी ने सभी प्रश्नों के उत्तर दिये। उस दिन मेरे मन में भी कुछ सवाल आये। हम अपने बारे में दस अच्छी और दस बुरी बातें भी नहीं लिख पा रहे थे परन्तु अपने सामने वाले के बारे में हम बहुत

कुछ बोल देते हैं। ऐसा क्यों?लक्ष्मी दीदी ने बताया कि हम जिस नजर से किसी इंसान को देखते हैं, हमें वही दिखता है। अगर हम अच्छाई की नजर से देखेंगे तो हमें इंसान में अच्छाइयाँ दिखेंगी। बुरे दृष्टिकोण से देखेंगे तो बुराइयाँ ही दिखेंगी। इसलिए हमें अपने दृष्टिकोण तथा मन को बदलना चाहिए। इस से सब कुछ अच्छा लगेगा। उस दिन की चर्चा यहीं खत्म हुई।

उसके बाद अगले दिन मास्टर जी ने हमें चार कली वाली सलवार की कटिंग बतायी। जो पहले हमने कागज पर की। पाँच दिन तक हमने कागज पर कटिंग करके मशीन पर उस कागज की सावधानी से सिलाई की। पाँच–छः दिन में यह कटिंग का काम हमें पूर्णरूप से आ गया। हमने स्वयं ही चार कली वाली सलवार की कटिंग कपड़े पर की। जो कि हम ठीक से कर सके। उसके बाद मास्टर जी की मदद से मशीन में सिलाई की। यह सलवार बहुत अच्छी बनी थी। उसके बाद हमने घर में भी अभ्यास किया। जब चार कली वाली सलवार पूर्ण रूप से बनानी आ गयी तो मैंने चार सलवारें खुद घर में बनायी।

तेरह अगस्त को मास्टर जी ने बताया कि इस बार हम स्वतंत्रता दिवस की तैयारी भी करेंगे। पन्द्रह अगस्त को हम सभी लोग आठ बजे सिलाई केन्द्र में एकत्रित हुए। ठीक नौ बजे हमने राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया। उसके बाद एक स्वर में राष्ट्रगान गाया। संस्था के प्रमुख किमोठी जी ने पन्द्रह अगस्त के बारे में बताया। केन्द्र की किशोरियों और महिलाओं ने चेतना गीत, राष्ट्र गीत गाये। केन्द्र की कुछ किशोरियों ने पन्द्रह अगस्त की जानकारी दी। अन्त में हमारे विद्यालय के अध्यापक ने पन्द्रह अगस्त की जानकारी दी और राष्ट्रीय ध्वज के बारे में भी बताया। उस दिन मिली हुई जानकारियाँ हमें जीवन भर याद रहेंगी। हम अपने साथियों के साथ चर्चा भी कर सकते हैं।

राष्ट्रीय पर्व मनाने के बाद अन्य कपड़ों की तरह हमें सूट की कटिंग भी पेपर पर सिखायी गयी। पूरे चार दिन तक सभी ने इसका अभ्यास किया। इस अभ्यास के बाद मास्टर जी ने कपड़े पर सूट की कटिंग बतायी। हमने तीन दिन तक कटिंग की। कटिंग समझ में आ जाने के बाद मास्टर जी ने हमें सूट की सिलाई करना सिखाया। यह हमें अच्छे से समझ में भी आ गया। मास्टर जी का व्यवहार हमारे प्रति बहुत अच्छा है। वे हमें हर एक चीज बहुत अच्छे से बताते हैं और समझाते भी हैं।

उसके बाद मास्टर जी ने ब्लाउज की कटिंग पेपर पर करना सिखाया। सात दिन तक हमने यह काम सीखा। तत्पश्चात् कपड़े पर ब्लाउज की कटिंग सात दिनों तक की। आजकल हम ब्लाउज की सिलाई सीख रहे हैं। ब्लाउज की सिलाई सीखते हुए हमें आज तीन दिन हो चुके हैं। मैं सिलाई सीखने के बाद दुकान खोलना चाहती हूँ। मैं स्वयं ही रोजगार करूँगी और मान–सम्मान के साथ पैसा भी कमाऊँगी।

संस्कृति

राजीव रावत

मैं राजीव रावत, आप सभी से अपनी संस्कृति के बारे में बात करना चाहता हूँ। मैं उन लोगों की बात करूँगा जिन्होंने अपनी संस्कृति थोड़ी–बहुत बचा रखी है। साथ ही, उन पहाड़ी लोगों की बात करूँगा जो देहरादून–दिल्ली या अन्य शहरों में रहते हैं। कोविड महामारी के दौरान मैंने देखा कि गढ़वाली भाई–बन्धु जो गाँव में वापस आये हैं, अपनी बोली में नहीं बल्कि हिन्दी में बातें कर रहे हैं। वे गढ़वाली भाषा बोलने में शरमा रहे हैं।

मैं एक ऐसे परिवार से मिला जो कभी गढ़वाल के हमारे गाँव में रहते थे किन्तु अब वे बाहर रहते हैं। उनकी गढ़वाली बोली बड़ी अच्छी थी। मैंने उनसे कहा कि वे अच्छी गढ़वाली बोलते हैं। उन्होंने कहा कि उनका बचपन गाँव में ही बीता। तब मैंने उनसे कह ही दिया कि क्या उनकी घरवाली भी गढ़वाली बोल पाती है। उन्होंने जवाब दिया कि बोल नहीं पाती पर बींग या समझ लेती है। उनका लड़का गढ़वाली बोलता है और समझ लेता है। लड़की न तो बोल पाती है, न समझ पाती है क्योंकि उस का बचपन तो दिल्ली में ही बीता।

उनका कहना था कि वे विगत पच्चीस–तीस वर्षों से घर–बार छोड़कर दिल्ली में ही रहे। बीच में कभी गाँव नहीं आये। दिल्ली महानगर का रहन–सहन और परिवेश गाँव से बिल्कुल अलग है। वे आपस में बातचीत भी हिन्दी में ही कर रहे थे। यह देख कर मुझे बड़ा अचरज हुआ।

जब वे घर आये तो उन्हीं दिनों गाँव में शादी हो रही थी। उन के बच्चे शादी में खुश नहीं थे क्योंकि वहाँ पर सभी काम गढ़वाली रीति–रिवाज से हो रहा था। ढोल–दमाऊ, मसक–बीन से शादी में रंग आ रहा था। बच्चों का मानना था कि बाहर की शादी में तो स्पेशल डी.जे., बैंड और बाहर का खाना होता है। लड़की का तो गाँव में जरा भी मन नहीं लगा। जब कोई गौशाला से गोबर निकालता था तो उसे उबकाई आ जाती थी। उसे बाहर रहकर शायद यह पता नहीं था कि उसके पूर्वजों ने ये सभी काम इतनी मेहनत से किये। तभी उसके माँ–पिता दिल्ली में जाकर रहने लायक बने। उन्हें शिक्षित किया तभी तो दिल्ली में काम मिला।

बाद में एक दिन उस लड़की ने भी सोच लिया कि गाँव की अन्य लड़कियों की तरह वह भी काम करेगी। पहले उस से कुछ काम हुआ ही नहीं। लेकिन फिर धीरे–धीरे कुछ काम सीख गयी। तब उसे भी गाँव में रहना अच्छा लगने लगा। उस लड़की ने तो अपनी संस्कृति थोड़ी बहुत समझ ली। अब वह गढ़वाली होने पर गर्व करती है। गाँव से बाहर गये लोगों को ये नहीं भूलना चाहिए कि वे भी कुमाऊँ या गढ़वाल के किसी गाँव से निकले हैं। गढ़वाली में बातचीत करने का बड़ा महत्व है। इस में कोई शर्म नहीं। पहाड़ हमारी आन–बान और शान हैं।

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

प्रीति रावत

मेरे पिताजी का नाम श्री कुन्दन सिंह रावत और माँ का नाम श्रीमती सरिता देवी है। मेरी दोस्त सिलाई केन्द्र में जा रही थी तो मैंने भी अपने माता–पिता को इस के बारे में बताया। मेरे माता–पिता ने मुझे वहाँ जाने की अनुमति दे दी। मैं उसी दिन से सिलाई केन्द्र में जाने लगी। मैं सात जुलाई से सिलाई केन्द्र में जुड़ी। जब मैं प्रथम दिन सिलाई सेन्टर में गई तो बहुत अच्छा लगा। सभी दोस्तों के साथ सिलाई सीखने में बहुत मजा आया। सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में आने पर बहुत सी नयी–नयी गतिविधियाँ करने को मिलीं।

वैसे तो मुझे सिलाई में रूचि नहीं थी परन्तु कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन में यह अवसर मिला कि समय का सदुपयोग करूँ। यह तो बहुत अच्छी बात है कि सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र हमारे ही गाँव में खुला है। केन्द्र गाँव में ही खुलने से सिलाई के प्रति मेरी रूचि भी बढ़ने लगी। मुझे अब सिलाई इतनी अच्छी लगने लगी है कि मैं चाहती हूँ कि

जल्दी से जल्दी यह काम सीख लूँ और भविष्य में कुछ कर के दिखाऊँ। जिस से सिलाई सिखाने वाले हमारे गुरू जी श्री देवेन्द्र सिंह बिष्ट जी का भी नाम ऊँचा हो। मैं अपने माता–पिता और अपने गाँव का भी नाम रोशन करना चाहती हूँ।

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में आने पर मुझे बहुत सी नयी चीजें सीखने को मिली। बहुत सी जानकारियाँ भी प्राप्त हुई। पहले दिन काज–बटन बनाना सीखा। दूसरे दिन हुक लगाना सीखा, तुरपन करना सीखा। उसके बाद अखबार में मास्क की कटिंग करना सीखा। फिर हमने कपड़े पर मास्क की कटिंग की। उसके बाद हमने मास्क को सिलना सीखा।

हमने अनेक किस्म के कपड़े बनाना सीख लिया है। जैसे–मास्क, प्लाजो, चार कली वाली सलवार, कमीज, ब्लाउज इत्यादि। आजकल हम ब्लाउज बनाना सीख रहे हैं। सिलाई सेन्टर में आकर मशीन के भागों तथा मशीन के पेंच–पुर्जों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। जैसे–मशीन कैसे चलाई जाती है, धागा क्यों टूटता है, मशीन खराब सिलाई क्यों देती है इत्यादि।

सिलाई सीखने के अलावा हम अन्य बहुत सी गतिविधियाँ करते हैं। जैसे हर रविवार को साफ–सफाई करते हैं। बरसात के मौसम में दो बार वृक्षारोपण भी किया। यहाँ पर सिलाई के मास्टर भी बहुत अच्छे हैं। वे हमें हर काम लगन से बताते हैं। वे समय से सिलाई सेन्टर में आते हैं। वे बहुत ही अच्छे और स्वाभाविक व्यक्ति हैं। अब हम अपने घर में फटे हुए कपड़ों को सिल सकते हैं। अपनी माँ तथा परिवार के अन्य सदस्यों के लिए भी कपड़े सिल सकते हैं। आज के समय में सिलाई, कताई, बिनाई इत्यादि काम सीखने का बहुत महत्व है। इस से हम अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। सिलाई व्यवसाय करने का सशक्त माध्यम है।

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में हमने राष्ट्रीय पर्व, स्वतंत्रता दिवस, भी मनाया। सभी ने इस पर्व को बड़ी ही धूमधाम से मनाया। हमारे साथ प्राइमरी स्कूल के बच्चे तथा महिलाएं एवं गाँव के अन्य लोग शामिल हुए। बच्चों ने भाषण दिये। किसी ने चुटकुले सुनाये। इसी प्रकार उपस्थित सभी लोगों ने कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया। सिलाई करना भी हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। केन्द्र का महत्व इस से भी है कि यहाँ हम सिलाई करने के अलावा अन्य कई गतिविधियाँ करते हैं। जो हम महिलाओं और किशोरियों को ताकत देती हैं। इस से हम सभी स्त्रियों समाज में आगे बढ़ रही हैं।

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

शोभा चौहान

मैंने सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र जाख में 10.07.2020 से जाना प्रारम्भ किया। मेरे केन्द्र के अनुभव बहुत ही अच्छे रहे। मुझे पहले सिलाई करने में रूचि नहीं थी परंतु जब से जाख केन्द्र में जाना प्रारम्भ किया तो सिलाई में मेरी रूचि बढ़ने लगी। मैं लॉकडाउन के समय का सदुपयोग करना चाहती थी। इसलिए सिलाई सीखने का निर्णय लिया। यह अवसर मुझे अपने गाँव में ही केन्द्र से सुलभ हो सका।

शुरूआत में पुराने कपड़े पर काज बनाना सीखा। बिष्ट जी बहुत ही अच्छे तरीके से सिलाई की छोटी–बड़ी बातें विस्तार से बताते हैं। उस के बाद मैंने तुरपन करना सीखा। बटन के काज तथा हुक के काज बनाने भी सिखाये गये। हम घर पर भी इन सभी चीजों को सीखने का अभ्यास करते रहे।

प्रशिक्षण केन्द्र में हम सब मिलजुल कर कार्य करते हैं। प्रशिक्षण केन्द्र में आकर सर्वप्रथम प्रार्थना होती है। उसके बाद उपस्थिति लगायी जाती है। उसके बाद सिलाई और कटिंग करना सिखाया जाता है। यहाँ आकर मैंने सब के साथ मिलकर कार्य करना सीखा। हुक और काज के बाद हमें मशीन के भागों के बारे में बताया गया। उसके बाद मास्क बनाना सीखा। मैंने मास्क, प्लाजो, चार कली वाली सलवार, कमीज और ब्लाउज बनाना सीखा। मास्टर जी हमें पहले नाप लेना सिखाते हैं। नाप लेने के बाद कागज पर नाप ले कर कटिंग करना तथा उसके बाद कपड़े पर निशान लगाकर कटिंग करना सिखाते हैं। अंत में सिलाई की जाती है।

मेरे अनुभव बड़े प्रेरणादायक रहे। हम हर हफ्ते रविवार को केन्द्र की सफाई करते हैं। जुलाई माह में बगीचों की सफाई करने के बाद वृक्षारोपण किया। इस में फलों और फूलों के वृक्ष शामिल थे। पन्द्रह अगस्त के दिन हमने राष्ट्रध्वज फहराया। राष्ट्र के वीरों के बारे में चर्चा की। समय–समय पर संस्था से श्री किमोठी जी और लक्ष्मी दीदी जरूरी दिशा निर्देश देने और देखरेख करने आते रहते हैं वे बच्चों को प्रोत्साहन देते रहते हैं।

इस प्रशिक्षण के बाद हम अपना स्वरोजगार का काम खोल सकते हैं। अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। यह महिलाओं, खासकर गाँव की महिलाओं, के लिए एक बहुत ही अच्छा अवसर उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा द्वारा प्रदान किया गया है।

इस का उपयोग कर के महिलाएं स्वरोजगार द्वारा आर्थिक रूप से मजबूत हो सकती है। घर के खर्चों को पूरा करने में मदद कर सकती हैं। यही नहीं वे घर की चारदीवारी से मुक्त हो कर बड़ा व्यवसाय करके समाज में अपनी एक अलग पहचान बना सकती हैं। महिलाएं–पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल सकती हैं, आत्मनिर्भर बन सकती है।

यह प्रशिक्षण केन्द्र उन सभी महिलाओं, बालिकाओं के लिए एक आशा की किरण और एक स्वर्णिम अवसर है जो अपने दम पर कुछ नया काम करना चाहती हैं। वे लोग, जिनके पास इतने पैसे नहीं हैं कि वे बाहर जा कर बड़े–बड़े संस्थानों में मोटी फीस दे कर सिलाई का प्रशिक्षण ले सकें, अपने सपनों को पूरा करें, इस से पूरा लाभ ले रहे हैं। मैं इस संस्था और श्री किमोठी जी का धन्यवाद करना चाहती हूँ कि इस बार हमारे गाँव जाख को केन्द्र खोलने के लिये चुना। श्री किमोठी जी और लक्ष्मी दीदी समय–समय पर यहाँ आकर बच्चों तथा महिलाओं से उनके कार्य, प्रशिक्षण में आने वाली परेशानियों और जरूरी सामान की आवश्यकता आदि के बारे में जानकारी लेते रहते हैं। वे समस्याओं का समाधान भी करते हैं, इसी कारण सिलाई का यह काम सुचारू रूप से चल रहा है।

वसुधैव कुटुम्बकं

कैलाश पपनै

गाँव में बीते बचपन के दिन बहुत याद आते हैं। आज मेरे गाँव धमेड़ा में बस गिने चुने लोग ही रहते हैं लेकिन पहले खूब चहल–पहल थी। खेत आबाद थे। क्षेत्र में कृषि प्रधानता की झलक दिखती थी। बैलों की घंटियों, गाय के रम्भाने की आवाज से मन को आनन्द की अनुभूति होती। पक्षियों का चहचहाना भी खूब सुनाई देता। गाँव से स्कूल की ओर आते जाते बच्चे अपनी–अपनी टोलियों में आपसी मेलजोल का पाठ जरूर पढ़ते। आज की तरह गाँव के नजदीक दुकानें और बाजार नहीं थे। सभी लोग एक साथ सामान खरीदने के लिए बाजार जाते। कभी–कभार देर हो जाने पर मशालें जलाकर वापस आना बड़ा अच्छा लगता।

जब फसल कटती तो गाँव के समस्त निवासी खेतों में नजर आते। फसल या घास काटते समय अकारण मिल गयी किसी छिपी हुई बेल से ककड़ी तोड़ने का आनन्द किसी उत्सव से कम नहीं होता था। खेतों में काम करते हुए दोपहर में एक साथ भोजन करना भी मन को रोमांचित करता। गाँव में सभी त्योहारों को मिलजुल कर मनाना इस वजह से अच्छा लगता था कि उसमें प्रेम का स्वाद जरूर मिला होता। वयस्कों के बीच में चाहे कितना ही मनमुटाव क्यों न हो रहा हो, बच्चों का अपना अलग संसार होता।

इन सबके बीच मुझे पिरूली आमा की बहुत याद आती है। वे सिर्फ मेरी नहीं बल्कि गाँव की आमा थीं। गाँव के अच्छे और खुशी के कामों में खुश रहती और विपदा के क्षणों में सभी के लिए दुःखी होती।

पिरूली आमा के साथ लगभग अठारह वर्ष की आयु तक रहा। वे मेरी चहेती इसलिए बन गयीं क्योंकि उनसे तरह–तरह के खाने की सामग्री मिला करती। उनका चहेता इसलिए भी बन गया क्योंकि बाजार से कोई चीज लानी हो तो ले आता। इस कारण वह मुझ पर विश्वास करती थी। पिरूली आमा की शादी छोटी उम्र में हो गयी। ससुराल में आमा के दिन अच्छे नहीं गुजरे। इस कारण वह बचपन में ही मायके आ गयी। अपने भाई, भद्‌या (भाई के बच्चों) के साथ रहने लगी।

वे मजेदार किस्से सुनातीं। उस समय गाँव में बिजली नहीं थी। एक बार आमा ने बताया कि उनका भद्‌या फोटो खींचने के लिए दुकान में ले गया। वे बहुत खुश थीं। स्टूडियो में पहुँचे तो फोटोग्राफर ने कहा कि थोड़ी देर रूकें, बिजली चली गयी है। आमा कहती कि वे अन्दर पहुँची भी नहीं थी, दरवाजे में ही खड़ी थी। वहीं से वे बाहर आ गये। तभी फोटोग्राफर

ने कहा ''आ गयी, आ गयी।'' अम्मा कहती हैं ''भूलू, मकैं तो के समझ में नी आयी'' (मुझे तो कुछ समझ में नहीं आया)। फोटो खिंचवाई पर मन में सवाल बना रहा। दुकान से बाहर आने के बाद भद्या से पूछा, ''तू ये बता देलि में तो मैं ठाढ़ छी, उ का बैट ए'' (तू ये बता कि दरवाजे में तो मैं स्वयं खड़ी थी, बिजली किस रास्ते से अंदर आयी होगी)।

एक बार आमा ने बताया कि गंगा नदी में स्नान करने के लिये भद्या उन्हें हरिद्वार ले गया। स्नान के बाद पंडित जी ने कहा कि वे अपने पति का श्राद्ध भी कर लें। आमा को गुस्सा तो बहुत आया पर पंडित जी का आदेश भी मानना ही हुआ। पंडित जी ने कहा कि वे सब रीति करने के बाद मन में बोलें कि ऐसा पति मुझे हमेशा मिले। आमा कहती, उसे क्या पता कैसा था। मैंने मन ही मन कहा कि भगवान मुझे कभी भी ऐसा पति न मिले। उनके आँसू टपकने लगे, ''कष्ट बहुत भोगा मैंने।''

वे सूर्यास्त से पहले खाना खा लेती। शाम को चार बजे आमा की पूजा का समय होता। घंटी की आवाज आती तो मैं भी तैयार हो जाता। जरूर रोटी बन गयी होगी, यह सोचता हुआ उन के घर जा पहुँचता। धुएं भरे कमरे में टकटकी लगाये चुपचाप बैठकर उन्हें पूजा करते देखता। उस वक्त वसुधैव कुटुम्बकं की वास्वतिक भावना समझ में आयी। आमा जाति–बंधन से दूर भगवान के सामने हाथ जोड़कर गाँव में सभी की सलामती की दुआ माँगती। उनकी पूजा में पूरे गाँव के लोगों के नाम होते। हर एक के लिए एक ही बात कहती, भगवान ज्यू वीक ले भल करि दिया (भगवान जी उसका भी अच्छा कर देना)। किसी से मनमुटाव होने के बावजूद पूजा में उनके लिए भी दुआ ही माँगी जाती। पूजा में कोई श्लोक या मंत्र नहीं होते पर सच्चे मन से की गयी प्रार्थना अलग ही लगती थी। आज हम किसी दूसरे व्यक्ति को बाहरी मन से सांत्वना देते हैं। आमा का जैसा प्रेम मैंने अन्य किसी व्यक्ति में नहीं देखा।

आमा पुराने टन्टे–मन्टे (टोने–टोटके) भी जानती। पेट दर्द में मंत्र (राख से पेट को मलना) जुक की जड़ी, गिरने पर डोल की जड़ एवं मकड़ी हो जाने पर झाड़ उनसे ही लिया जाता। आमा बहुत हिम्मत वाली थी। एक दिन बताया कि जंगल में उनकी एक बकरी को बाघ उठाकर ले गया। वे भी कहाँ डरती? बकरी वापस ले आयी। उनकी बतायी गयी बातों की हम बच्चे कभी–कभार पुष्टि करवाते। कभी गाँव में बाघ आ जाये तो आमा को सबसे आगे कर दिया जाता। उनकी आवाज में डर न था, एक गर्जना सी थी। जंगली जानवरों को भगाने के लिए वे खूब हो–हल्ला कर देतीं।

पिरूली आमा में उस समय के समाज का प्रतिबिंब झलकता है। आज की परिस्थितियों में देखें तो कोई एक–दूसरे की फिक्र नहीं करता। पिरूली आमा हमेशा मतभेद भुलाकर सभी का साथ देती। सभी के लिए एक आशीर्वाद रहता। छोटा–बड़ा कोई भी हो, माथे पर ममता भरा उनका चुम्बन आज भी गाँव में लोगों को याद है।

वे कथाएं सुनाने में सिद्धहस्त थीं। आमा गाँव में भूत–प्रेत से लेकर रामायण, महाभारत की कहानियों की एकमात्र स्रोत थीं। दिन का समय गाँव का भ्रमण करती और फिर शाम का भोजन। उसके बाद पुरानी कथाओं एवं ठहाकों का दौर चलता।

अटेची का नाम अटेरू और लैम्प को लम्फु कहती। ये शब्द आज कहीं सुनायी नहीं देते। कोई बाहर से आता तो कहती कि उनके लिए पेड़्य (पेड़े) अवश्य लाना। किसी के भी घर में मेहमान आये तो प्रसाद (हलवा) जरूर बनाती। उसमें आज की तरह मेवे तो नहीं होते थे पर प्रेम की मिठास ऐसी कि आज भी उस स्वाद को महसूस कर सकता हूँ।

मैं स्वार्थवश, हलवे के लिए आमा के लगभग सभी काम कर दिया करता। घर के लोग कई बार कहते कि हलवा कच्चा रह गया है, लेकिन मेरे लिए वह अमृत समान ही होता। मेरी जरूरत भी होती और परोक्ष रूप से पिरूली आमा के प्रेम का पात्र भी बना रहता।

पिरूली आमा की मीठी नोकझोंक वाला गुस्सा अपनी भाभी के समक्ष दिखायी देता। ननद–भाभी के आपसी प्रेम व नाराजी के किस्से तो सुने थे पर इसकी सत्यता उन्हीं से जान सका। एक बार अंधेरे में बाघ के डर के कारण रास्ते में खड़ी आमा को मुझ से हल्की चोट लग गयी। माँ–पिताजी के डर से मैं चुपचाप भीतर जाकर छिप गया। सभी लोग इकट्ठा हो गये। सच बताने की हिम्मत मेरी भी नहीं हुई पर मरता क्या न करता। मैंने बाहर आ कर आमा के कान से चेहरा सटाकर चुपचाप कहा कि उन्हें चोट मेरे कारण लगी है। उनका गुस्सा शान्त हो गया। फिर पूछने लगी कि कहीं भाभी ने तो नहीं कहा था उन्हें मारने के लिए। सभी लोग हँसने लगे। भाभी भी उनकी बातें सुन रही थीं। हँसते हुए बोली कि आज बच गयी, वर्ना गाँव में घूम–घूमकर मेरी ही बुराई होती। एक–दूसरे के लिए गुस्सा था पर आदर भी रहता। तबियत खराब हो जाने पर दोनों ही एक–दूसरे का हाल जरूर पूछती।

पिरूली आमा गाँव में आने वाली नयी बहुओं को ''संस्कार'' जरूर देती। उसमें खास बात यही होती कि परिवार को बाँधकर रखें। ''ब्वारी यसू झन करिये यस करिये, सासू सौर इज्जत करिये'' (बहू ऐसा करना, वैसा करना। सास–ससुर की इज्जत करना आदि)। वे कहती जातीं लोग ध्यान से सुनते।

आमा को उनके भद्या कभी देहरादून तो कभी हिमांचल या मुरादाबाद अपने साथ ले जाते। जाड़ों के मौसम में वे घूमने जाती और गर्मी के दिनों में वापस आती। उनका घर आना उत्सव जैसा लगता। शाम को चार बजे रोटी व हलवा खाने का सिलसिला चल पड़ता।

पिरूली आमा की यादें आज भी गाँव में जीवन्त हैं। गाँव में कोई भी उनके किस्से कहना शुरू कर दे तो महफिल जम जाती है। उनकी पूजा की रीति और स्नेहिल स्वभाव से वसुधैव कुटुम्बकं के सही अर्थ को समझने का अवसर मिला, यही अनुभूति मन में सर्वथा बनी रहती है।

जिला पंचायत चुनाव का अनुभव

महानन्द बिष्ट

मैंने वर्षों तक समाज सेवा में जीवन लगाने के बाद और हमेशा ही लोगों के बीच रहने की गलतफहमी के साथ 2019 के पंचायती चुनावों में भाग्य आजमाने का निर्णय लिया। चुनाव के मैदान में उतरने से पहले जिस समाज के लिये काम करता था, वहाँ पर सभी से राय–मशविरा किया। ग्रामवासियों की सहमति के बाद चमोली जिला पंचायत के देवर खडोरा वार्ड से चुनाव लड़ने का निर्णय लिया। सालों बाद इस वार्ड में सामान्य सीट आयी थी। तब लगा कि समाज सेवा के साथ–साथ जिला पंचायत से भी लोगों की मदद की जा सकती है। इस वजह से चुनाव लड़ने का मन बनाया। हालांकि चुनावों के निर्धारण हेतु सरकार की ओर से तिथि तय नहीं हो पा रही थी लेकिन इस से पहले ही क्षेत्र में जाकर लोगों से पूछा। सभी गाँवों में महिलाओं व युवकों ने सहमति दी और सहयोग करने का आश्वासन भी दिया। इस विश्वास के साथ कि जब हमेशा ही लोगों के बीच में रहता हूँ तो सभी मेरा साथ जरूर देगें, चुनाव में प्रत्याशी होने का मन बनाया।

13 सितम्वर 2019 को राज्य निर्वाचन आयोग उत्तराखण्ड द्वारा पंचायती चुनाव की अधिसूचना जारी होते ही साथियों के सहयोग से मैंने चुनाव प्रचार शुरू कर दिया। संसाधनो की कमी के बावजूद लगातार चुनाव प्रचार में चुटा रहा। इस चुनाव प्रचार के कार्यक्रम में महिलाओं ने पूरे दम–खम के साथ प्रचार किया। भ्रमण के दौरान लोगों की फीड बैक मिलती रही। इस से मेरा साहस भी बढ़ने लगा। साहस बढ़ा तो मैंने भी चुनाव प्रचार को बढ़ाया।

प्रचार के दौरान देवर खडोरा सीट पर पहले छः लोगों के चुनाव मैदान में उतरने की खबरें आ रही थीं। नामांकन होने तक पाँच प्रत्याशी ही मैदान में रहे। एक पार्टी में प्रत्याशी तो पहले से ही तय था लेकिन दूसरी पार्टी की ओर से प्रत्याशी के बारे में स्पष्टता नहीं थी। निर्दलीय के रूप में मेरे साथ ही अन्य लोग भी तैयारियों में जुटे हुए थे। अधिसूचना जारी होने के बाद सभी लोगों ने प्रचार–प्रसार तेज कर दिया। इस बीच एक अन्य प्रत्याशी जो अंतिम समय तक चुनाव में खड़ा न होने की बातें कर रहे थे, उनकी भी भागीदारी करने की बात सामने आयी। मैं इस ओर से आश्वस्त रहा और चुनाव प्रचार तेज करता रहा। चुनाव में लोगों का सहयोग मिल रहा था। लोगों का साथ मिलता रहा इसलिए पीछे हटने का सवाल ही नहीं था।

मैंने लगभग सभी गाँवों का भ्रमण कर लिया। मेरे साथ ग्रामीण महिलाएं और युवक भी प्रचार कर रहे थे। अब मन में संकट पैदा हो गया कि यदि किसी भी पार्टी की ओर से कोई अन्य प्रत्याशी आयेगा और इतनी तैयारी के बाद यदि मैं अपना नाम वापस लेता हूँ तो जो लोग समर्थन में हैं उन्हें भी लगेगा कि चुनाव के मैदान से हट गया है। इस कारण मन में ठान लिया कि अब जो भी होगा, सो होगा। यदि मैं नाम वापस लेता तो इतने वर्षों से जो समाज सेवा करता रहा उस पर भी प्रश्न–चिह्न लग जाता। अब जो भी होगा देखा जायेगा, इस तर्ज पर नामांकन की तिथि के अंतिम दिन 24 सितम्बर 2020 को भारी जन–सैलाब के साथ क्षेत्र के मुर्गी–फार्म से रैली निकाली। इस रैली में क्षेत्र के सभी लोगों का सहयोग रहा। इस रैली की बाजार में चर्चा भी खूब हुई। सभी प्रत्याशियों में संसाधनों के मामले में सबसे कमजोर होने के बाद भी मुझे प्रचार तक लोगों का अपार समर्थन मिलता रहा।

तभी एक गाँव में भ्रमण के दौरान पैर फिसलने से मेरा हाथ टूट गया। हाथ पर प्लास्टर करने के बाद लगातार गाँवों का भ्रमण करता रहा। लोगों ने संसाधनों से भी खूब सहयोग किया। 5 अक्तूबर 2019 को जब लोग वोट डालने गये तो क्षेत्रवाद तथा लालच ने मेरी इतनी सालों की समाज सेवा को पीछे छोड़ दिया। इसमें मेरा साथ देने वाले कुछ लोग भी शामिल रहे। ताज्जुब इस बात पर हुआ कि जब वोट डालने के बाद समीक्षा की तो पता चला कि कई परिचित महिलाएं भी परिवार के दवाब के कारण या लालच में ऐन वक्त पर मुझे भूल गयीं। इतने सालों से समाज में काम करने के कारण मेरा विश्वास था कि चुनाव में लोग धोखा नहीं देंगे। समीक्षा के दौरान जब अन्य साथी मुझे बता रहे थे कि अमुक–अमुक लोगों की वोट नहीं पड़ी तो मैं उनसे ही कह रहा था कि ऐसा किसी सूरत में नहीं हो सकता। मतगणना की अंतिम तिथि तक रूके रहो। इसी आशा के साथ कि लोगो का जो सहयोग प्रचार के दौरान मिला है वह मतदान में भी मिलेगा, मन में विश्वास था कि चुनाव जीत ही जाऊँगा। आखिर वह दिन भी आ गया जब फैसला होना था।

21 अक्टूबर 2019 को मतगणना शुरू होने से पहले अपने गाँव के मंदिर में गया और पूजा अर्चना की। पूजा करने के थोड़ी देर बाद परिणाम सामने आने लगे। पहली गणना में कुछ मतों से आगे था। मेरे समर्थक भी गाँव में साथ में ही थे। मतगणना देवर खडोरा के गाँवों से ही हो रही थी। स्वाभाविक था कि उस क्षेत्र के प्रत्याशियों को ही अधिक मत मिलते। दोपहर होते–होते मेरे अपने गाँव के आसपास के क्षेत्र की मतगणना होने लगी। जिन गाँवों में विश्वास था कि सबसे अधिक मत मुझे मिला होगा वहाँ से कम मत आने पर आशा टूटने लगी। अन्य प्रत्याशियों के बराबर चल रहा था तो लगता था कि जीत मिलेगी। संसाधनों के मामले में सबसे कमजोर था फिर भी मन में आशा थी कि लोग समाज सेवा को प्राथमिकता देंगे। अंतिम क्षण में मेरा ये विश्वास टूट गया।

परिणाम आने के बाद बहुत दुख हुआ कि आखिर किस काम की ये समाज सेवा?कुछ दिनों तक यही मन में चलता रहा लेकिन फिर अपने पूर्वजों को याद करते हुए चुनाव को भूल कर पुनः जो पहले का काम था उसे शुरू कर दिया। इस चुनाव में मुझे करीब सोलह सौ लोगों ने समर्थन दिया। चंद मतों से हार का सामना करना पड़ा। मन में ऐसा ख्याल आया कि कम से कम सोलह सौ लोगों ने तो सीमित संसाधनों वाले प्रत्याशी को समर्थन दिया। कुछ समय बाद पुनः अपने दैनिक सेवा के कार्य में जुट गया। इस दौरान सभी गाँवों के लोगों को धन्यवाद भी दिया। चाहे उस गाँव के लोगों ने मुझे समर्थन दिया हो या नहीं। सभी लोगों का आभार व्यक्त करने के लिये जनता के बीच में गया। विश्वास दिलाया कि समाज के लिये हर समय कार्य करने को तत्पर रहूँगा।

चुनाव में हारने के बाद जब महिला सम्मेलन हुआ तो अन्य सालों की अपेक्षा अधिक महिलाओं ने इस सम्मेलन में प्रतिभाग करके समाज में मेरा मान बढ़ाया। चुनाव का परिणाम जैसा भी रहा हो लेकिन एक बार फिर से क्षेत्रवाद, जातिवाद तथा संसाधनों से ऊपर आकर जन–सहयोग देखने को मिला। हालाँकि चुनाव परिणाम आने के बाद तमाम गाँवों के युवाओं ने मेरी हार पर दुःख व्यक्त किया। आज भी बहुत से साथियों को चुनाव में हार जाने का मलाल है। जो लोग चुनाव में साथ नहीं दे पाये या किसी कारण से घर–परिवार की बातों में आकर अपना मन बदल बैठे उनके चेहरों पर भी पछतावा दिखा। हालात जो भी रहे हों लेकिन अब आने वाले वाले समय के लिये स्वयं मुझे चिंतन की जरूरत है। अंत में यह नोट लिख कर इस लेख को समाप्त करूँगा कि यह मेरा स्वयं का आत्ममंथन है। किसी के मन को ठेस पहुँचाने कर मेरा कोई इरादा नहीं है। क्षेत्र के अन्य सभी निवासियों की तरह मेरी भी यही इच्छा है कि हमारे इलाके का निरंतर विकास हो। सुविधाएं बढ़ें और क्षेत्रवासी सुखमय जीवन व्यतीत कर सकें।

सिलाई

लक्ष्मी नेगी

जब मैं शुरू में सिलाई प्रशिक्षण के लिये आई तो पहले काज बनाना सीखा। उसके बाद तुरपन करना सीखा। साथ ही हुक वाले काज बनाने सीखे। श्री देवेन्द्र सिंह बिष्ट जी ने हमें मास्क बनाना सिखाया। उन्होंने कहा कि मास्क बनाना बहुत जरूरी है। पहले हमने मास्क की कटिंग अखबार पर की। उसके बाद कपड़े पर कटिंग करना सीखा। फिर मास्क को सिल कर तैयार कर दिया।

मैंने प्लाजो बनाना सीखा। बिष्ट जी ने हमें प्लाजों की कटिंग करना अखबार पर सिखाया। उसके बाद हमने कपड़े पर कटिंग की। फिर प्लाजो अच्छी तरह से सिलकर तैयार कर दिया। मास्टर जी ने हमें मशीन के बारे में भी बताया। उन्होंने हमें यह भी बताया कि जब कभी मशीन में कोई खराबी हो तो उसे कैसे ठीक करते हैं। उसके बाद चार कली वाला सलवार बनानी सीखी। इसकी अनुमानित लम्बाई 22 इंच, बेल्ट की लम्बाई 7 इंच, बेल्ट की चौड़ाई 20 इंच, मोहरी आवश्यकतानुसार या 5 इंच रखी। हमने पहले सलवार की कटिंग अखबार पर की। दूसरे दिन सिलाई करना सीखा। फिर सलवार को सिलकर तैयार कर दिया।

हम हर रविवार को सेन्टर की सफाई करते हैं। सिलाई सेन्टर में हमने स्वतन्त्रता दिवस भी मनाया। बहुत से कार्यक्रम किये। राष्ट्रगान, देश भक्ति के गीत गाये। गुरूजी ने हमें स्वतन्त्रता दिवस के बारे में बहुत सी बातें बतायी। उसके बाद हमने कमीज की कटिंग और सिलाई की। हमने ब्लाउज सिलना भी सीखा है। ब्लाउज की कटिंग भी मास्टर जी ने पहले अखबार पर सिखायी। उसके बाद कपड़े पर कटिंग की। अभी तक तो हमने इतना ही सीखा। आगे अन्य कपड़े सिलने सीखेंगे।

कोरोना वायरस

प्रवीण रावत

आज कल कोरोना वायरस, कोविड–19 ने दुनिया के सभी देशों में भारी तबाही मचा रखी है। भारत में इसका व्यापक असर देखा जा सकता है। गढ़वाल के अनेक भाई–बन्धु जो अन्य राज्यों में काम कर रहे थे, वे सभी कोविड–19 के चलते अपने गाँवों में पहुँच चुके हैं। आजकल घर–गाँवों में बहुत चहल–पहल हो रही है। वे घर जो कभी विरान थे, आज लोगों की आवाजाही से भरे हैं। वहाँ अलग ही रंगत है। मैं सभी घर लौटे हुए प्रवासियों से निवेदन करूँगा कि वे अपनी संस्कृति को न भूलें। अनेक गढ़वाली गीत भी इसी आधार पर बने हैं। जैसे–करिश्मा शाह का गाना कि ''कन भलो लगदो, हमारो पहाड़'' और नरेन्द्र सिंह नेगी जी का यह गाना कि ''कख लगाड़ छवि, कैमा लगाड़ छवि, ये पहाड़ की, कुमो–गढ़वाल की रीता कूढ़ो की'' इत्यादि। यह कोविड–19 के लॉकडाउन के दौरान हुआ मेरा अपना अनुभव है। इस अनुभव से मैंने सीखा कि हमारे पहाड़ की संस्कृति शहरों से अलग है। शहरों में अलग वातावरण और भिन्न रीति रिवाज हैं। जिससे हम परंपराओं और रीति–रिवाजों पर गर्व कर सकें। हमें अपने पहाड़ की संस्कृति को जीवंत बनाए रखना चाहिए। ग्रावासियों को आँखें मूँद कर शहरी रहन–सहन की नकल करने की बजाय अपने गाँव और पहाड़ की संस्कृति को बचाए रखने के लिए लगातार प्रयास करने चाहिए।

कौशल विकास

रोशनी नेगी

मैंने सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में सत्रह जुलाई 2020 से आना प्रारम्भ किया। वहाँ के मेरे अनुभव बहुत ही अच्छे रहे। पहले मेरी सिलाई सीखने में कोई रूचि नहीं थी। जब मैं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में आने लगी तो शिक्षक श्री देवेन्द्र सिंह बिष्ट जी ने काज बनाना सिखाया। उसके बाद उन्होंने मशीन के बारे में बताया। मशीन के हर एक भाग के बारे में जानकारी दी। जैसे हैंडल, हत्था, बूट, बॉबीन, सूई, सब्बल, कान, नथनी, चिमटी, डिब्बी, सिडिल, फुल्ली, क्लिप आदि के बारे में बताया गया। फिर मास्टर जी ने हमें अखबार में प्लाजों की कटिंग करना सिखाया। उसके बाद सिलाई सीखने में मेरी रूचि बढ़ने लगी। मास्टर जी हमें ध्यानपूर्वक सिलाई सिखाते हैं। उनका व्यवहार बहुत ही अच्छा है। हम कभी–कभी डाँट भी खा लेते हैं क्योंकि जहाँ पर समझ में नहीं आता हैं वहाँ पर गलती हो ही जाती है। जब तक डाँट नहीं पड़ेगी तो वहाँ हम गलती पर गलती करते जायेंगे। हम सिलाई ठीक तरह से नहीं सीख पायेंगे।

बिष्ट जी ने चार कली वाली सलवार काटना और सिलना सिखाया। सर्वप्रथम सलवार के आसन को जोड़ना सिखाया। उसके बाद कमर के लिये बेल्ट पर चुन्नट व बुकरम लगाकर तरह–तरह के डिजाइन बताये। उसके बाद मास्टर जी ने अखबार में सूट की कटिंग करना सिखाया। सबसे पहले सूट में आगे की पट्टी को जोड़ना सिखाया। फिर कन्धे का हिस्सा जोड़ा। उसके बाद गले के पीछे की पट्टी जोड़ी। उसके बाद कमर और बाजू को जोड़ना सिखाया। मुझे सिलाई सीखने में कोई रूचि नहीं थी तथापि अब सलवार सूट और प्लाजो सिलना आ ही गया है। आजकल मास्टर जी कपड़े पर ब्लाउज की कटिंग करना सिखा रहे हैं। मास्टर जी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में समयानुसार पहुँच जाते हैं। उसके बाद हम सब एक साथ एक छोटी सी वन्दना कहते हैं। राष्ट्रगान करने के बाद हम सिलाई का कार्य शुरू करते हैं।

जब मैं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र से पूरी तरह सिलाई करना सीख जाऊँगी तो मैं गुरूजी की आजन्म आभारी रहूँगी। हो सकता है कि मैं अपना सिलाई का काम आगे बढ़ा कर स्वरोजगार ही शुरू कर लूँ।

सिलाई बिनाई कार्यक्रम

पीताम्बर गहतोड़ी

ग्राम–चौड़ाकोट, जिला चम्पावत की निवासी मुन्नी मौनी, पत्नी श्री प्रकाश सिंह मौनी, ने 2012 में एम. ए. की पढ़ाई पूरी की। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी, चम्पावत द्वारा चलाये जा रहे सिलाई कार्यक्रम में श्रीमती दीपा बोहरा के संरक्षण में छः माह का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इनका प्रशिक्षण केन्द्र ग्राम–तोली एवं पाटी में रहा।

शिक्षित होने के बावजूद सिलाई केन्द्र में आने से पहले मुन्नी घरेलू कार्यों में व्यस्त रहती थी। यह उन्हें कहीं न कहीं अच्छा नहीं लगता था। तीनों बच्चों के विद्यालय चले जाने के बाद उन के पास काफी समय बच जाता था। वे इसका सदुपयोग करना चाहती थी, परन्तु संसाधनों का अभाव और ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण चाह कर के भी कुछ नहीं कर पा रही थी। उन के पति प्राथमिक स्वास्थ केन्द्र पाटी में संविदा पर डॉटस (टी.बी.) केन्द्र में खून की जाँच करते हैं। मुन्नी देवी कुछ अतिरिक्त आय अर्जित कर के पति को सहयोग देना चाहती थी। उनकी इच्छा थी कि वे स्वयं भी कुछ काम करें।

इसी दौरान पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी के प्रमुख श्री पीताम्बर गहतोड़ी जी से बातचीत हुई। संस्था द्वारा चलाये जा रहे सिलाई–बिनाई प्रशिक्षण के बारे में जानकर मुन्नी देवी का साहस बढ़ा। प्रशिक्षण से होने वाले लाभ को समझने के बाद वे सिलाई सीखने के लिए राजी हो गयी। इसके बाद उन्होंने सिलाई–बिनाई एवं कम्प्यूटर केन्द्र, पाटी, में आना शुरू किया।

प्रशिक्षिका श्रीमती दीपा बोहरा बताती हैं कि मुन्नी देवी एक अनुशासित स्त्री हैं। वह समय पर केन्द्र में उपस्थित हो जाती थी। उन्होंने पूर्ण लगन व मेहनत के साथ काम किया। उन के इस गुण से प्रशिक्षिका बहुत प्रभावित हुई है।

अब मुन्नी देवी सिलाई के कार्य में दक्ष हो चुकी हैं। उन्होंने पाटी में सिलाई की एक दुकान खोली है। कुछ समय पश्चात् आमदनी में वृद्धि करने के उद्देश्य से सिलाई के कार्य से अर्जित की गई जमा पूँजी से उन्होंने दुकान में श्रृंगार का सामान रखा। उन के पति इस कार्य में निरंतर सहयोग देते हैं। वर्तमान में वे सिलाई से लगभग तीन से साढ़े तीन हजार रुपये प्रतिमाह और श्रृंगार सामग्री की बिक्री से एक से डेढ़ हजार रुपये प्रतिमाह कमा लेती हैं।

मुन्नी देवी कहती हैं कि प्रशिक्षण से प्रभावित होकर उन्होंने अपने बच्चों को केन्द्र में कम्प्यूटर सीखने के लिए भेजा। वर्तमान में उन के कार्य से परिजन खुश हैं। स्वयं मुन्नी भी आत्मनिर्भर बन कर आगे बढ़ी हैं। छोटे–मोटे खर्च के लिए उन्हें परिवार से पैसे नहीं लेने पड़ते। अब मुन्नी और उनके पति हर माह बचत कर लेते हैं। यह पहले सम्भव नहीं हो पाता था। मुन्नी की भविष्य में सिलाई के काम को आगे बढ़ाने की योजना है। जिस से वह किसी अन्य जरूरतमंद को भी रोजगार दे सकें। उन का मानना है कि आत्मनिर्भर बनने के लिए इस तरह के प्रशिक्षण बहुत आवश्यक हैं। वह कहती हैं अगर वह प्रशिक्षण नहीं लेती तो शायद ही दुकान खोलने की हिम्मत कर पाती। उन का यह भी कहना है कि इस तरह के प्रशिक्षण समय–समय पर होने चाहिये। बाजार की माँग के अनुरूप नये परिधान सिलना सीखना चाहती है। वे कहती हैं कि प्रशिक्षण के उपरान्त संस्था द्वारा प्रमाण पत्र भी दिया जाना चाहिए।

श्रीमती दीपा भट्ट, पत्नी श्री कैलाश चन्द्र भट्ट, ने बी. ए. तक पढ़ाई की। पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी द्वारा संचालित सिलाई/बिनाई/कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र में छः माह का सिलाई तथा तीन माह का बिनाई में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इनका प्रशिक्षण केन्द्र ग्राम– तोली तथा पाटी में रहा।

प्रशिक्षण से पूर्व दीपा जी की आर्थिक स्थिति अच्छी थी तथापि वे आत्मनिर्भर बनना चाहती थी। एक दिन दीपा को पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण का पता लगा। उन्होंने संस्था से सम्पर्क कर के सिलाई सीखने की इच्छा प्रकट की। प्रशिक्षण के दौरान दीपा जी का व्यवहार बहुत अच्छा था। वे समय पर केन्द्र में उपस्थित होकर प्रशिक्षिका द्वारा दिये गये कार्यों को अच्छी तरह तथा जल्दी पूरा कर लेती थी।

दीपा जी के परिजनों की पाटी में वस्त्रों की एक दुकान है। उन्होंने दुकान में एक दर्जी को रखा हुआ था। दीपा ने उक्त दर्जी के द्वारा किये जाने वाले कार्य स्वयं करने आरम्भ किये। वे अब अपने तथा परिवार के कपड़े स्वयं सिल लेती है। उन्हें दुकान से ही सिलाई के लिए पर्याप्त ग्राहक मिल जाते हैं। प्रशिक्षण के बारे में दीपा जी का मानना है कि आत्मनिर्भर बनने की दिशा में यह एक अच्छा कदम है। प्रशिक्षण से स्वयं दीपा तथा परिजन प्रसन्न हैं।

कु0 प्रियंका भारती, पुत्री श्री राम रतन भारती, अस्थायी निवास प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पाटी ने सात माह का प्रशिक्षण लिया। प्रियंका एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखती हैं। उन के परिवार में एक छोटी बहन, दो भाई और माता–पिता हैं। भाई–बहनों में बड़ी होने के कारण प्रियंका अपनी जिम्मेदारी समझती हैं। कुछ काम करके पिता का सहयोग करना चाहती हैं। पहले क्षेत्र में रोजगार के कोई अवसर न होने के कारण वे कुछ काम नहीं कर पा रही थीं। इसी दौरान प्रियंका को संस्था द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण केन्द्र का पता लगा। उन्होंने

प्रशिक्षण केन्द्र में जाकर प्रशिक्षिका श्रीमती दीपा बोहरा से सम्पर्क किया। प्रशिक्षिका ने उन्हें सिलाई–बिनाई कार्यक्रम के बारे में समझाया। दीपा बताती हैं कि प्रियंका जागरूक एवं मेहनती है। प्रशिक्षण के दौरान वह समय पर केन्द्र में आती तथा प्रशिक्षिका द्वारा जाने के लिए कहने पर ही वापस जाती। प्रशिक्षिका यह भी बताती है कि प्रियंका ने कम समय में महिलाओं के वस्त्र सिलने का काम सीख लिया। जैसे–सूट, सलवार, ब्लाउज, साधारण फ्रॉक, चूड़ीदार पजामा, कैंची सलवार, प्लाजो इत्यादि। प्रियंका दुल्हन के कपड़े भी सिलने लगी हैं। लोग स्वयं ही गाँवों तथा बाजार से उनके घर में आकर कपड़े सिलवा लेते हैं।

प्रियंका की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वह बाजार में किराये की दुकान (दो हजार से तीन हजार रुपये तक किराया) लेने में असमर्थ है। भविष्य में आय तथा ग्राहकों की संख्या बढ़ने पर दुकान किराये में लेने की इच्छा करती है।

वर्तमान में प्रियंका सिलाई के कार्य से तीन–चार हजार रुपये प्रतिमाह तक कमा लेती हैं। प्रियंका मानती हैं कि उन के लिए सिलाई का प्रशिक्षण एक नया सवेरा जैसा है। वह शायद ही कभी पैसे के बल पर इस तरह का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकती थी। वह अपनी दक्षता को और ज्यादा बढ़ाना चाहती है।

प्रियंका ने मशीन से बिनाई का काम भी सीख लिया है। वर्तमान में बिनाई मशीन न होने के कारण वह इस कार्य को नहीं कर पा रहीं। भविष्य में वह बिनाई का कार्य भी करेंगी, जिससे आमदनी में लगातार वृद्धि होती रहे।

ग्राम जौलाड़ी की निवासी अनीता मेहता, पुत्री श्री जगत सिंह मेहता, ने छः माह का सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस दौरान इनका प्रशिक्षण केन्द्र ग्राम–तोली था। अनीता स्वयं स्नातक हैं तथा गाँव में रह कर ही कुछ काम करना चाहती हैं।

अनीता एक गरीब परिवार की बेटी हैं। इनके पिता मजदूरी करते हैं। पारिवारिक स्थिति कमजोर होने की वजह से बी. ए. से आगे की पढ़ाई नहीं कर सकी। इस कारण अनीता को महसूस होता था कि कोई ऐसा काम करे जो घरेलू कार्यों के साथ–साथ आसानी से हो जाए तथा उस से कुछ आय भी हो। केन्द्र खुलने के बाद अनीता ने पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी से सम्पर्क किया तथा सिलाई सीखने की इच्छा जाहिर की। प्रशिक्षण में अनीता ने कम समय में बहुत से कपड़े सिलने सीख लिये। अब वे सूट, पजामा, पेटीकोट, ब्लाउज, पुरानी जींस से पर्स आदि बना लेती हैं।

अनीता कहती हैं कि प्रशिक्षण के बाद लगभग तीन–चार माह में उन्होंने सात हजार रुपये के करीब जमा किये। वे सिलाई का कार्य अपने घर में ही करती हैं। अनीता का यह भी

कहना है कि वे शादी के बाद भी इस काम को जारी रखेंगी। शादी उसी परिवार में करेंगी जहाँ परिजनों को इस काम में आपत्ति ना हो।

अनीता का मानना है कि इस प्रकार के प्रशिक्षण समय–समय पर होने चाहिए। पचास रुपया प्रतिमाह फीस दे कर गरीब महिलाओं को प्रशिक्षण देना अत्यंत सराहनीय प्रयास है। यह कार्यक्रम गरीब बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक अच्छा कदम है। अनीता की माँ कहती हैं कि संस्था ने गाँव में ही केन्द्र खोला। इस वजह से महिलाओं को इसका पूर्ण लाभ मिल सका। अन्यथा वे स्वयं इस स्थिति में नहीं थीं कि बिटिया को कहीं बाहर भेज कर प्रशिक्षित कर सके।

अन्य महिलाएं जो घर पर आस–पड़ोस की महिलाओं के परिधान सिलने का कार्य कर रही हैं, उनमें विद्या पाटनी, पटन गाँव, लक्ष्मी देवी, तल्लाकोट, मुन्नी देवी, धूनाघाट, रजनी गहतोड़ी, गहतोड़ा, सीमा रावत, मूलाकोट, भावना लडवाल, रौलमेल, दुर्गा आर्या, रानीचौड़, सुमन आर्या, रानीचौड़, दुर्गा मण्डल, पाटी आदि प्रमुख हैं। ये सभी महिलाएं सिलाई के कार्य में दक्ष हैं। में ही ग्रामवासियों के कपड़े सिल कर आय अर्जित कर रही हैं।

चूँकि संस्था ने विगत दो वर्षों से यह कार्यक्रम जारी रखा है, इस से लगभग सौ महिलाएं लाभान्वित हुई हैं। नब्बे प्रतिशत से अधिक महिलाएं अपने परिवार के साथ–साथ आस–पड़ोस के कपड़ों की सिलाई का कार्य कर रही हैं। उक्त महिलाओं का कहना है कि रसोई की सामान्य जरूरतों की पूर्ति, बच्चों की फीस इत्यादि की व्यवस्था वे सिलाई के कार्य से कर लेती हैं।

इस प्रशिक्षण के संबंध में संस्था ने क्षेत्र के बुद्धिजीवियों, कामकाजी महिलाओं से बातचीत की। बुद्धिजीवी वर्ग का मानना था कि इस तरह के प्रशिक्षण गाँव की महिलाओं के लिए जरूरत बन गये हैं। कृषि कार्य दिन–प्रतिदिन कम हो रहा है। खेती में थोड़ा बहुत फसले होती हैं तो जंगली जानवर (सुअर, बंदर आदि) नष्ट कर देते हैं। मौसम परिवर्तन के कारण भी कृषि के उत्पादन में कमी आयी है। इस बदलाव के कारण यह जरूरी हो गया है कि ग्रामवासी रोजगार के कुछ अन्य साधन ढूँढ़े। नये संसाधन जोड़ें और उपयोग करें।

सिलाई का अनुभव

संजना नेगी

मैंने सिलाई केन्द्र के बारे में अपनी दोस्तों से सुना। अपने माता–पिता से सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में जाने के लिये पूछा। मेरी माताजी ने मुझे यहाँ भेज दिया। केन्द्र में शुरूआती दिनों में हमने काज बनाना सीखा। पहले मुझे यह काम करना नहीं आया पर जब शोभा दीदी ने सिखाया तो मैं सीख गयी। मैंने घर में भी पुराने कपड़े पर काज बनाये। दूसरे दिन हमने वो काम जमा कर के मास्टर जी को दिखाया। उस के बाद तुरपन सीखना शुरू किया। तुरपन का काम भी अगले दिन जमा किया। इसके बाद हमने मशीन के बारे में जाना। जैसे मशीन के भाग–हेण्डल, हत्था, सुई व सब्बल, कान, नथनी, चिमटी, बूट, बोबिन, डिब्बी, सिडिल, फुल्ली, क्लिप आदि कैसे काम करते हैं, मशीन में खराबी आने पर क्या करना चाहिए इत्यादि।

उसके बाद हमने प्लाजो बनाना सीखा। हम सब ने एक–एक प्लाजो बनाये। हमने कपड़े पर प्लाजो बनाये। घर में भी अभ्यास किया। इस की नाप कुछ यूँ रखी–लम्बाई–34 इंच, आसन–14 इंच, मोहरी–14½ इंच। हमने चार कली वाली सलवार बनाना सीखा। पहले अखबार पर कटिंग करना सीखा। जब हमें अच्छी तरह अखबार पर कटिंग करना आ गया तो मास्टर जी ने हमें कपड़े पर कटिंग सिखायी। उसके बाद कपड़े पर सिलना सीखा। सब साथियों ने एक–एक सलवार बनायी। उसके बाद हम ने सूट की कटिंग करना अखबार पर सीखा। ब्लैक बोर्ड पर माप के चित्र बनाये और फिर कॉपी में भी लिखा। सूट की कटिंग कपड़े पर की और सिलना सीखा।

हमने सीखा कि कपड़े की लम्बाई–24½ + 2½ इंच, तीरा–15 इंच, चेस्ट–32 इंच, कमर–28 इंच, हिप्स–32 इंच, पल्ला–32 + 2½ इंच रखना है। सबने एक–एक सूट सिली। हमने फिर मास्टर जी से कहा कि हमें पैन्ट वाली सलवार को सिलना सिखाओ। उन्होंने कहा कि यह बहुत कटिन है। जब हमें सिलाई के काम का कुछ अनुभव हो जायेगा तब वे हमें पैंट काटना और सिलना सिखा सकते हैं। हम नहीं माने और उनसे जिद करने लगे कि हमें तो यही सीखना है। जब हमने उसकी कटिंग अखबार पर सीखी तो हम कर ही नहीं पाये। उस के बाद मास्टर जी ने हमें ब्लाउज की कटिंग अखबार पर सिखायी। आजकल हम ब्लाउज सिलना सीख रहे हैं। हर लड़की एक–एक ब्लाउज सिल रही हैं। अब हम आगे भी बहुत से कपड़े बनाना सीखेंगे।

एक कहानी यह भी

कृष्णानन्द गहतोड़ी

उत्तराखण्ड के एक गाँव की बात है। एक लड़की थी सुनीता। सुनीता को जन्म से ही एक बीमारी थी। शारीरिक कमजोरी और हाथ–पैरों में कंपन की वजह से सुनीता परेशान रहा करती। ज्यादा काम नहीं कर पाती थी। साथ ही बीमारी ने उसे कुछ जिद्दी और गुस्सैल बना दिया था।

एक बार किसी अन्य राज्य से एक व्यक्ति गाँव में काम ढूँढने आया। पहले से ही शादीशुदा इस व्यक्ति की एक समस्या थी। उसकी कोई संतान न थी। पति–पत्नी मंदिरों में जाते, अस्पतालों के चक्कर लगाते लेकिन उन्हें कोई संतान न हुई। वे किसी बच्चे को गोद नहीं लेना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि अपनी ही संतान हो।

एक दिन बातों–बातों में उनके किसी परिचित ने सुनीता के बारे में बताया। यह भी कहा कि अगर वे चाहें तो उसके परिवारजनों से बात की जा सकती है। सुनीता के घर में अन्य परिजन भी इसी बीमारी की चपेट में थे। परिवार में बड़ी गरीबी थी। एक लड़की का ब्याह हो जाने से उन्हें भी सुविधा होती। इन्हीं सब परिस्थितियों के बीच तय हुआ कि सुनीता को देख लिया जाये। यदि वह सहमति दे तो विवाह किया जा सकता है। सुनीता के घर तक सड़क नहीं जाती थी। तय हुआ कि लड़की और परिजन सड़क के किनारे स्थित किसी रिश्तेदार के घर में आ जायें।

नियत दिन दोनों पक्षों में बातचीत हुई। सुनीता को देखा–परखा गया। सुनीता ने कहा कि शारीरिक समस्या के कारण वह घर में भारी काम न कर पायेगी। वर–पक्ष ने तुरंत इस समस्या का समाधान यह कहते हुए किया कि दो बहुएं घर में रहेंगी तो काम खुद ही बँट जायेगा। किसी पर बोझ नहीं पड़ेगा। इन सब बातों के बीच सुनीता ने विवाह के लिए रजामंदी दे दी। परिजन खुश हुए कि घर की लड़की का विवाह तय हुआ है।

इस प्रकार सुनीता वधु रूप में ससुराल आ गई। गरीब परिवार होने की वजह से सभी ग्रामवासियों ने विवाह में मदद की। कुछ माहों के बाद सुनीता की ओर काम की जिम्मेदारी बढ़ने लगी। पति से कहती तो वे चुप रहने की सलाह देते। गर्भवती होने पर उसे ससुराल में सास–ससुर के साथ रहने भेज दिया। वहीं पर अस्पताल में सुनीता ने एक बेटी को जन्म दिया। जन्म के तुरंत बाद परिजनों ने बेटी को संभालने की जिम्मेदारी स्वयं ले ली। वे सुनीता

से कहते कि बच्ची को स्तनपान न कराये। इससे बच्ची को भी बीमारी हो जायेगी। सुनीता मातृत्व का सुख न ले सकी। बस काम में लगी रहती। धीरे–धीरे हालात बिगड़ने पर सुनीता ने अपने दादा जी को सब बातें बताई। दादा जी ने उसे वापस मायके बुला लिया। तब से वह मायके में ही रहती है। बच्ची ससुराल में बड़ी हो रही है।

अब इस किस्से को पढ़ कर आप भी सोचें कि सुनीता को क्या करना चाहिये? वह मायके में ही रहे या ससुराल चली जाये। वह बच्ची को अपने पास रखना चाहती है। क्या वह कचहरी में जा कर न्याय माँगे? सुनीता सोचती है कि कचहरी आने–जाने और न्याय पाने की प्रक्रिया में काफी धन खर्च होगा। गरीब परिवार होने की वजह से उसके पास पैसे नहीं है। स्वयं की शारीरिक कठिनाइयों के कारण वह गाड़ियों में आना–जाना करते हुए कचहरी के चक्कर नहीं लगाना चाहती।

सुनीता की तरह अनकानेक स्त्रियाँ इसी प्रकार की कठिनाइयों से गुजरती हैं। सरकार और गैर–सरकारी संस्थाएं आपस में सहयोग करें तो बहुत सी महिलाओं की जिंदगी सुधर सकती है।

कौशल बढ़ाना

सिमरन बिष्ट

मैंने माह जुलाई में सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में अपना नाम दर्ज करवाया। यहाँ आकर सर्वप्रथम काज बनाना सीखा। मुझे यहाँ आने से पहले बिल्कुल भी काज बनाना नहीं आता था। उसके बाद हमने तुरपन करना सीखा। काज और तुरपन का अभ्यास अपने घर में भी कई बार किया। कुछ दिनों के बाद मैं इस कार्य में कुशल हो गई। इसके बाद इस काम में मैंने अन्य साथियों की मदद की।

इसके बाद हमने सिलाई की मशीन के बारे में सीखा। मशीन के बारे में जानने के बाद मैंने दूसरों को भी मशीन के भागों के विषय में जानकारी दी। हमें मास्टर जी ने पुराने समाचार पत्रों पर प्लाजो बनाना सिखाया। दो दिन तक हमने अखबार पर ही प्लाजो की नाप लेना और कटिंग करना सीखा। तीसरे दिन मास्टर जी ने हमें कपड़े पर प्लाजो बनाना सीखाया। मैंने तो घर में भी अपने लिए तीन प्लाजो बनाये। प्लाजो बनाने की प्रक्रिया हमने अपनी कॉपी में भी लिखी। यह प्रक्रिया मास्टर जी के द्वारा बताई गयी। उन्होंने सबकी कॉपियाँ भी चेक की। यह प्रक्रिया लगभग एक–दो हफ्ते तक चली।

हमारे प्रशिक्षक का नाम श्री देवेन्द्र सिंह बिष्ट है। वे बहुत ही सीधे स्वभाव के व्यक्ति हैं।

वे केन्द्र में आने के बाद प्रार्थना व राष्ट्रगान बोलने को कहते हैं। इस से चारों ओर का वातावरण शांत हो जाता है। हमारे मास्टर जी हमें केन्द्र में समय पर आने को कहते है। हमें जो कुछ भी सिखाते है वो जल्दी से समझ में आ जाता है।

प्लाजो सीखने के बाद हमने चार कली वाला सलवार बनाना सीखा। मास्टर जी ने सलवार की कटिंग पहले अखबार पर बतायी। यह प्रक्रिया लगभग चार दिन तक चली। उसके बाद मास्टर जी ने चार कली वाली सलवार कपड़े पर काटनी सिखायी। मुझे सलवार की कटिंग करना और सिलना बहुत ही अच्छा लगा। सलवार सीखने की प्रक्रिया को मैंने घर में भी कई बार दोहराया। इस तरह से इस कार्य में निपुण हो गई। यह प्रक्रिया लगभग दो हफ्ते तक चली। इस के बाद हमने कमीज की कटिंग करना सीखा। पहले हमने कटिंग अखबार पर ही सीखी। एक–दो दिन के बाद मास्टर जी ने इसकी कटिंग कपड़े पर सिखायी। बाकी सब कामों की तरह यह भी अच्छी लगी।

मास्टर जी बीच–बीच में हमारी कॉपी भी आगे से पीछे तक देखते हैं कि हमने कपड़ों की नाप और सिलने का तरीका ठीक से समझ लिया है अथवा नहीं। कमीज की कटिंग व सिलाई भी लगभग एक–दो हफ्ते तक चली। उसके बाद हमने ब्लाउज की कटिंग करना अखबार में सीखा। यह भी ज्यादा कटिन नहीं था। इसको हमने एक ही दिन में सीख लिया। आजकल हम ब्लाउज की कटिंग करना व सिलना दूसरी महिलाओं को भी सिखा रहे हैं। यहाँ आकर हमें कई नई चीजें सीखने का मौका मिला। मैं चाहती हूँ कि मेरी ही तरह अन्य बच्चे भी यहाँ आकर रोज कुछ न कुछ नया काम सीखें। इस के बाद हम स्वयं अपना रोजगार शुरू कर सकते हैं, पैसा कमा सकते हैं।

सिलाई बिनाई प्रशिक्षण दन्या

रमा जोशी

शिवा शक्ति समिति दन्या में माह जुलाई 2020 से उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के आर्थिक सहयोग से सिलाई बिनाई प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। पर्यावरण चेतना मंच मैचून–मनिआगर से श्रीमती नीतू आर्या एवं श्रीमती पूनम आर्या ने प्रशिक्षण देने का कार्य किया। सिलाई बिनाई प्रशिक्षण के लिए शुरू में बारह गाँवों की महिलाएं एवं किशोरियाँ आयीं। सिलाई सीखने के लिए बयालिस प्रतिभागियों का नामांकन किया। बिनाई सीखने के लिए सात प्रतिभागियों का नामांकन हुआ। कोविड–19 के नियमों का पालन करते हुए प्रशिक्षण को दो सत्रों में संचालित किया गया। प्रथम सत्र प्रातः 9 से 12.30 बजे तक तथा द्वितीय सत्र अपराह्न 2 से 5.30 बजे तक हुआ।

विगत दो वर्षों से पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी, चम्पावत, में भी उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के आर्थिक सहयोग से सिलाई बिनाई कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। संचालन से पूर्व पाटी में प्रशिक्षकों का दस दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। उसके बाद सिलाई बिनाई का काम किया गया। गत वर्ष पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी ने कार्यक्रम को एक अन्य गाँव में भी संचालित करने की इच्छा व्यक्त की। इस के लिए सिलाई, बिनाई की शिक्षिकाओं का चयन करके उन्हें शिवा शक्ति समिति दन्यां में प्रशिक्षण लेने के लिए भेजा। सिलाई सिखाने के लिए श्रीमती रीता बोहरा का चयन किया गया। रीता ने तीन वर्ष तक एक दर्जी की दुकान में महिलाओं के उपयोग के कपड़े सिले हैं। उन्हें कमीज, समीज, सलवार, ब्लाउज, चार कली का पेटीकोट इत्यादि परिधान बनाने आते हैं। वह पिछले एक वर्ष से ग्रामवासियों के कपड़े सफाई के साथ अपने घर में सिलती हैं।

बिनाई के लिए चयनित हुई शिक्षिका कृष्णा को हाथ से स्वेटर बनाने आते हैं। वे बिनाई के कुछ नमूने बनाने जानती हैं। वह बिनाई की मशीन से स्वेटर बनाना सीखना चाहती है। कृष्णा ने आठ दिवसीय प्रशिक्षण में बिनाई की मशीन चलाने के अलावा अनेक नये कौशल सीखे। जैसे–मशीन को मेज में फिट करना, मशीन के पुर्जों की जानकारी, मशीन की देख–रेख, मशीन में तेल डालना, सही तरीके से कैरिज को चलाना, ऊन के फन्दे डालना, कंघी में फन्दे फिट करना (छोटी कंघी, बड़ी कंघी का उपयोग), वेट फिट करना, गिरे हुए फन्दों को उठाना, फन्दे घटाना और बढ़ाना, सुई टूटने पर बदलना, बिनाई के नम्बर समझकर

बारीक और मोटी बिनाई करना, उल्टा सीधा बिनना, स्वेटर के गले व बगल में फन्दे कम करना, बिनाई के नमूनों की शुरूआत इत्यादि।

इस तरह सिलाई की शिक्षिका श्रीमती रीता बोहरा ने प्रशिक्षण के इन आठ दिनों में अन्य साथियों को फीते से नाप लेना सिखाया। हर दिन के काम को दिनाँक सहित डायरी में अंकित करना, कटिंग करने के विभिन्न तरीकों को सीखना, कागज में कटिंग करना, ग्रुप–चर्चा करते हुए कागज में कटिंग करना, कागज में की गयी कटिंग को सुई तागे से सिलना, कपड़े में नाप लेते हुए कटिंग करवाना, छोटे बच्चों के कपड़ों की कटिंग, बचे हुए कपड़े की टोपियाँ, झबले, लंगोट बनवाना, बच्चों की फ्रॉक, टॉप, कुर्ती के नमूने बनाना, धोती सलवार, पैन्ट सलवार, रूमाली फ्राक, अम्ब्रेलाकट फ्रॉक, पेटीकोट इत्यादि बनाना सीखा।

ये सभी कपड़े सिलना सीखकर इन के नमूने तैयार किये। हर दिन दोनों प्रशिक्षकों ने प्रथम और द्वितीय सत्र में अलग–अलग ग्रुप में बैठकर सीखा। दो दिन के बाद श्रीमती रीता बोहरा ने सीखने के साथ–साथ अन्य साथियों को सिखाने में भी मदद की। द्वितीय सत्र समापन के बाद छः से आठ बजे शाम को हर रोज दिन में सीखे गये परिधानों के नमूने बनाये। सायंकालीन प्रार्थना के बाद दिन भर के काम की समीक्षा की गयी। हर शाम समीक्षा के दौरान सभी ने अपने–अपने सुझाव दिये। सभी ने अपने अनुभवों को डायरी में अंकित किया। इस तरह नियमित तौर पर डायरी में अनुभव अंकित होते गये।

पाटी से आयी हुई श्रीमती रीता बोहरा ने सरल तरीके से कमीज का गला सिलना व काटना बताया। आठवें दिन समापन में पाटी से आयी दोनों शिक्षिकाओं ने सभी के साथ अपने अनुभव साझा किये।

पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी के संचालक श्री पीताम्बर गहतोड़ी ने आने के दिन और समापन के दौरान समस्त प्रतिभागियों के साथ मिलकर बातचीत की। उन्होंने संस्था के कार्यों पर चर्चा की। समापन समारोह में सिलाई, बिनाई का प्रशिक्षण ले रही महिलाओं के साथ कम्प्यूटर सीखने आ रही किशोरियों ने भी भाग लिया।

अपने कौशल बढ़ाना

अंशू डंगवाल

हमने 11.07.2020 को सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र जाख में आना शुरू किया। मास्टर जी ने हमें काज बनाने सिखाये। पहले हमें काज बनाने बिल्कुल नहीं आते थे। यहाँ आकर एक हफ्ते तक हमने काज बनाये। फिर तुरपन करनी सिखाई जो पहले तो ठीक नहीं हुई लेकिन धीरे–धीरे बिल्कुल सही होने लगी। तुरपन और काज बनाने का अभ्यास हमने घर पर भी किया।

लगभग दो हफ्ते के बाद मास्टर जी ने हमें मशीन के बारे में बताया। उन्होंने मशीन के सभी हिस्सों की पूरी जानकारी दी। हमने मशीन में सुई लगाना और मशीन को चलाना सीखा। हमें पैडल वाली मशीन चलानी भी सिखायी गयी। जो पहले मुश्किल था लेकिन अभ्यास के बाद पैडल चलाना आ गया।

मशीन के बारे में भी सभी जानकारियाँ पूरी तरह से मिल गयीं। उसके बाद हमें कागज पर कटिंग करनी सिखायी गयी। सबसे पहले कागज पर मास्क की कटिंग करनी सिखायी। एक–दो दिन में हमने कागज पर मास्क की कटिंग अच्छी तरह से सीख ली। फिर हमें मास्क की कटिंग कपड़े पर सिखायी गयी। एक–दो दिन के बाद हमें मास्क की सिलाई सिखायी। निरन्तर अभ्यास से मास्क की सिलाई अच्छी हुई। हमने मास्क सिलने में दूसरों की मदद भी की। मास्टर जी ने हमें मास्क बनाना बहुत अच्छे तरीके से सिखाया। वे बहुत अच्छे और शान्त स्वभाव के हैं। वे सिलाई व कटिंग के तरीके बहुत बारीकी से सिखाते हैं। वे हमेश नियत समय पर केन्द्र में आते हैं और सभी को समय से आने को कहते हैं। उनके कहने पर हम केन्द्र में सफाई करते हैं। उन्होंने केन्द्र के आसपास बहुत से फूल लगाये हैं। उन्होंने हमें सिलाई की कॉपी बनाने को कहा। हमने जो भी सीखा उसकी कटिंग की प्रक्रिया हम कॉपी में लिखते हैं। मास्टर जी समय–समय पर हमारी कॉपी चेक करते हैं।

पन्द्रह अगस्त के दिन केन्द्र में कुछ कार्यक्रम हुए। झण्डारोहण के बाद भाषण भी हुए। सभी ने मिलकर राष्ट्रगान गाया। पन्द्रह अगस्त मनाने के बाद हमने प्लाजो, चार कली की सलवार और सूट की कटिंग और सिलाई करना सीखा। कमीज की कटिंग व सिलाई भी लगभग एक–दो हफ्ते तक चली। उसके बाद हमने अखबार व कपड़े पर ब्लाउज की कटिंग करना सीखा। यह भी ज्यादा कठिन नहीं था। केन्द्र में हमें कई नई चीजें सीखने का मौका मिला है। मैं चाहती हूँ कि मेरी ही तरह अन्य किशोरियाँ भी यहाँ आकर कुछ न कुछ नया काम सीखें।

क्षेत्रीय महिला सम्मेलन

पुष्पा पुनेठा, अनिला पंत

दिनाँक 15.03.2020 को शिवा शक्ति समिति संस्था के प्रांगण में क्षेत्रीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस में दन्यां क्षेत्र के पन्द्रह गाँवों की महिलाओं ने प्रतिभाग किया। सम्मेलन में भाग लेने हेतु आटी, उकाल, गौली, डसीली, सांगड़, दन्यां, मुनौली, बसाण, धारागाड़, थली, कुलौरी, कोट्यूड़ा, चल्मोड़ीगाड़ा, फल्याँट, खूना आदि गाँवों से महिलाएं आयीं। सभी महिलाएं अपने–अपने गाँवों से झण्डा/बैनर लेकर नारे लगाते हुए संस्था में पहुँची। संस्था में आकर चेतना गीत और पहाड़ी गाने गाये। उस के बाद कार्यक्रम शुरू हुआ। कार्यक्रम का संचालन संस्था की सचिव अनिला पंत जी ने किया। उन्होंने सभी को महिला सम्मेलन की बधाई दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षा कोट्यूड़ा संगठन की नन्दी देवी को बनाया। सभी ने ताली बजाकर उनका स्वागत किया। मुख्य अतिथि महिला परिषद् की अनुराधा पाण्डे जी को बनाया गया। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा की ओर से आये पार्थ, चारू और रमा जी को भी मंच पर आमंत्रित किया गया। टीका लगाकर सभी मंचासीन कार्यकर्त्ताओं का स्वागत किया गया। सर्वप्रथम टकोली संगठन की किशोरियों ने स्वागत गीत गाया। इस के साथ ही कोट्यूड़ा और धारागाड़ के संगठनों ने एक प्रार्थना गा कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

धारागाड़ संगठन की अध्यक्षा पुष्पा पाण्डे ने संगठन के कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि जब से उनके गाँव के लोग संस्था से जुड़े तब से जागरूकता आई है। अठ्ठाइस साल से संगठन बना है। पहले संगठन में पाँच रुपया प्रतिमाह जमा करते थे। अब सौ रुपया जमा करते हैं। कोष के पैसे से महिलाओं ने बर्तन और अन्य सामग्री खरीद रखी है। महिलाएं कोष से ऋण लेती हैं। हर माह में एक दिन मीटिंग करते हैं। गाँव में शिक्षण केन्द्र खुला है। वहाँ पर बच्चे कहानी, भाषा, गणित आदि सीखते हैं। केन्द्र खुलने से बच्चों का विकास हो रहा है। किशोरियाँ भी कहानियों की किताबें पढ़ती हैं। धारागाड़ गाँव की अध्यक्षा ने बताया कि गाँव में शराब बन्द की है। सभी कार्य शान्ति से हो रहे हैं। महिला संगठन ने शराब पर रोक लगाई है। अनिला दीदी ने कहा कि इनके गाँव में हम संस्था के प्रतिनिधि भी गये थे। वहाँ कोई शराबी नहीं दिखाई देता।

महिला संगठन मुनौली की सदस्या राधा भट्‌ट ने संगठन और ग्राम शिक्षण केन्द्र के बारे में बताया। गाँव में संगठन बनने से सभी को सुविधा हो रही है। कोष के माध्यम से सामुहिक उपयोग की सामग्री ले रखी है। ग्राम शिक्षण केन्द्र में गाँव के सभी बच्चे जाते हैं। वहाँ पर पढ़ाई के साथ–साथ अन्य बहुत सी गतिविधियाँ होती हैं। बच्चे कहानियों की किताबें पढ़ते हैं।

कोट्‌यूड़ा संगठन की नन्दी देवी ने बताया कि संस्था के माध्यम से महिलाएं आगे बढ़ी हैं। उत्तराखण्ड महिला परिषद् ने महिलाओं को हस्ताक्षर करना सिखाया। आजकल जब महिलाएं बैंक में जाती हैं तो हस्ताक्षर करती हैं। राशन लेने जाती हैं तो वहाँ भी स्वयं हस्ताक्षर करती हैं। संस्था के माध्यम से द्वाराहाट क्षेत्र के संगठनों को देखने का मौका मिला। महिलाओं ने गाँव में संगठन बनाकर सामग्री ले रखी है। कोष जमा करके ऋण भी लेते हैं। ग्रामवासी सुअरों और बन्दरों से परेशान हैं। संगठन के माध्यम से बारी–बारी से जंगली जानवरों को भगाते हैं। गाँव में होली का त्यौहार सौहार्दपूर्ण माहौल में मनाया गया।

रमा दीदी ने महिला सम्मेलन की बधाई दी और जोश बढ़ाने के लिये नारे लगाये। रमा दीदी ने बताया कि संगठन में हर जाति, उम्र, अमीर–गरीब सभी महिलाएं जुड़ें। सभी लोग साथ में बैठकर संवाद करें। सबकी समस्याएं सुनें। समाज में जो भी गड़बड़ी हो रही है उसे दूर करें। खनन का विरोध करें। अपने गाँव के मिस्त्री को काम के लिये बुलायें। इससे गाँव के व्यक्ति को रोजगार मिलेगा। आन्दोलनात्मक कार्य करें। पाटी, चम्पावत जिले में महिलाओं ने आवारा जानवरों के विरोध में आन्दोलन किया। उन्होंने सड़क बंद कर दी। तब सरकारी अफसरों ने आकर उन से बात की और आवारा गायों की व्यवस्था की। उन्होंने बताया कि गणाई–गंगोली क्षेत्र से माननीय विधायक बनी श्रीमती मीना गंगोला जी सबसे पहले ग्राम प्रधान बनी। उस के बाद ज्येष्ठ प्रमुख बनी। अब वे विधायक बनी हैं। वे कहती हैं कि गाँव में महिला संगठन के माध्यम से ही उन्होंने समाज में जाना सीखा। रमा दीदी ने कहा कि हम में से कोई भी महिला विधायक बन सकती है।

बसाण गाँव की अध्यक्षा पार्वती आर्या ने बताया कि गाँव में संगठन बना है। महिलाओं ने जंगल बचाया है। गाँव में मीटिंग होती है। वे गोष्ठी में भाग लेने अल्मोड़ा गई। वहाँ से नयी–नयी जानकारियाँ ली और फिर संगठन में सभी को बताई। ग्राम शिक्षण केन्द्र अच्छा चला है। बच्चे केन्द्र में जाते हैं और कहानियाँ पढ़ते हैं।

गौली गाँव की अध्यक्षा अनिता पाण्डे ने बताया कि उनका संगठन मजबूत है। हर माह की दस तारीख को गोष्ठी होती है। संगठन के माध्यम से कोष में पैसे जमा करते हैं। संगठन के पैसों से महिलाएं अनेक काम कर लेती हैं। महिलाओं ने जंगल बचाया है। बारी–बारी से

सुअरों, बन्दरों को भगाते हैं। गाँव में पानी की टंकियाँ बनी हैं। आजकल क्षेत्र में शराब का प्रचलन हो रहा है। शराब के लिए आन्दोलन करना है। सभी संगठन के लोग सहयोग देंगे।

टकोली की अध्यक्षा नन्दी जोशी ने अपने संगठन के बारे में बताया कि हर माह गोष्ठी होती है। महिलाएं बार–बारी से बन्दरों और सुअरों को भगाती हैं। संगठन के द्वारा गाँव में जंगल का संरक्षण किया है। उन्होंने कहा कि वे आज मंच में पहली बार आयी हैं। संस्था के माध्यम से जो ग्राम शिक्षण केन्द्र खुला है, वहाँ बच्चे अनेक गतिविधियाँ सीख रहे हैं। वे केन्द्र में कहानियाँ पढ़ते हैं, चित्रांकन करते हैं। इन गतिविधियों से बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद मिलती है।

उकाल की अध्यक्षा हेमा जोशी ने बताया कि उनके संगठन की गोष्ठी हर माह होती है। संस्था के प्रतिनिधि भी गोष्ठी के लिये आते हैं। वे संस्था से जुड़कर उत्तराखण्ड महिला परिषद् अल्मोड़ा में गोष्ठी में भाग लेने गयीं। कोष के माध्यम से गाँव के लिए सामग्री खरीदी है। आजकल ग्राम शिक्षण केन्द्र गाँव में नहीं हैं। गाँव के सभी कार्य संगठन के माध्यम से करते हैं।

संस्था की कार्यकर्त्ता पुष्पा पुनेठा ने महिला सम्मेलन की बधाई दी। नारे लगाये। बताया कि गाँव में संगठन के माध्यम से क्या–क्या समस्याएं हल की जाती हैं। उन्होंने कहा कि जब तक हर महिला जागरूक नहीं होगी अपना कार्य खुद नहीं करेगी, आगे नहीं बढ़ पायेगी। महिलाएं ग्राम सभा की गोष्ठियों में जाकर अपनी बात कहें। ब्लॉक में जायें। पेंशन आदि समस्याओं पर खुद जाकर बात करें। संस्था के कार्यकर्त्ता महिलाओं की समस्याओं का समाधान करने हेतु साथ में आयेंगे।

डसीली की अध्यक्षा मीना देवी ने बताया कि गाँव में संगठन मजबूत है। ग्राम प्रधान सहयोग करते हैं। सुअरों और बन्दरों की चौकीदारी हेतु एक आदमी रखा गया है। इस कारण गाँव में फसल अच्छी हुई। साग–सब्जी भी अच्छी हो रही है। चौकीदार का पैसा ग्राम प्रधान दे रहे हैं। होली के मौके पर किसी ने शराब नहीं पी। ग्राम प्रधान ने महिला संगठन से कहा कि लोग शांतिपूर्ण माहौल में होली खेलें। ग्राम शिक्षण केन्द्र से बच्चे होशियार हो रहे हैं।

कुलौरी गाँव की अध्यक्षा शान्ती आर्या ने बताया कि हर माह संगठन की गोष्ठी होती है। संगठन ने जंगल बचाया है। रास्तों और नौले की सफाई करते हैं। महिलाएं क्षेत्र में शराब के खिलाफ आवाज उठाती रहती हैं। आजकल ग्राम शिक्षण केन्द्र बन्द हुआ है। संस्था से जुड़कर महिलाओं में जागरूकता आई है। वे स्वयं अपने काम कर लेती हैं, झिझकती नहीं है।

रमा दीदी ने महिलाओं को बताया कि उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान

के सहयोग से चार, पाँच जिलों में कौशल विकास का कार्यक्रम हो रहा है। साठ–पैंसठ साल की महिलाएं भी स्वेटर, टोपी आदि बुनकर चार–पाँच हजार रुपया महीने तक कमा रही हैं। एक स्वेटर की बिनाई चार सौ रुपया लेती हैं। सिखाने वाली शिक्षिका भी मेहनत करती है। आप लोग भी बिनाई और सिलाई का कार्य कर सकती हैं।

अनिला दीदी ने बताया कि वे संस्था की सचिव हैं। साथ ही, सहकारी बैंक से ब्लॉक की अध्यक्षा भी हैं। वे गुजरात घूमने गयी थीं। वहाँ लोगों को शराब पीते नहीं देखा। वहाँ पर कहीं भी बंजर भूमि नहीं थी। सभी लोग मेहनत करते हैं। महिलाएं गाय पालती हैं। दूध से साल में चालीस हजार रुपया तक कमाती हैं। अपना पैसा है, खुद खर्च करती है। बाशिंग के फूलों व पत्तों का चव्वनप्राश बनता है, दवा बनती है। यह सब उस राज्य में जाकर देखा। गौली की महिलाओं ने शिक्षा पर नाटक किया तथा पहाड़ी गीत में नृत्य किया।

आटी की सदस्या बिसनुली देवी ने बताया कि गाँव में संगठन की गोष्ठी हर माह होती है। संस्था के कार्यकर्त्ता आते है। कोष जमा करते हैं। संगठन ने बर्तन व सामग्री खरीदी है। महिलाएं कोष से ऋण लेती है। संगठन ने जंगल सात सालों से बन्द किया था। इस साल जंगल को खोला है। देवी के मंदिर में पूजा–पाठ करने के बाद जंगल खोला गया। अब ग्रामवासी जंगल से सूखी लकड़ी ला रहे हैं। टहनियों की काट–छाँट भी कर रहे हैं। जंगल से बिछावन हेतु पत्ते ला रहे हैं। जंगल बन्द करने से सभी ग्रामवासियों को फायदा हुआ। गाँव में पहाड़ी व्यंजनों का एक ढाबा भी खुला हैं। वहाँ महिलाएं भी काम करती है। धारागाड़ गाँव की महिलाओं ने सुअर, बन्दर भगाने और ग्राम प्रधान से अपनी समस्या कहने के संदेश वाला एक नाटक प्रस्तुत किया। महिलाओं में काफी उत्साह था।

दन्यां संगठन की सदस्या मंजू भण्डारी ने बताया कि जब से संस्था से जुड़कर संगठन बना, महिलाओं में बहुत अन्तर आया है। महिलाएं साफ–सफाई से रहती हैं। अपने घरों को साफ रखती हैं। बच्चों को साफ रखती हैं। नौले–धारों की सफाई करती है। कोष के माध्यम से गाँव में सामग्री खरीदी है। महिलाएं कोष से ऋण लेकर अपने छोटे–बड़े कार्य करती हैं। उन्होंने कहा कि वह गाँव की आशा पद पर कार्य करती है। इस समय पूरे देश में कोरोना वायरस का असर चल रहा है। अगर किसी को लम्बे समय तक बुखार, खाँसी, बदन में दर्द, सांस लेने में तकलीफ हो तो तुरन्त सूचना दें। आशा और स्वास्थ्य विभाग के अन्य कर्मचारी प्रशासन को बतायेंगे। इस बीमारी का इलाज फ्री में होगा। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा काफी अच्छी संस्था है। मैं भी वहाँ मीटिंग में भाग लेने गई थी। अन्य लोग भी जरूर जायें। वहाँ जाकर बहुत जानकारी मिलती है। स्वयं का विकास होता है। मंजू ने आगे बताया कि गाँव में सभी लोग बार–बार साबुन से हाथ धोयें। ठण्डी चीजें न खायें। कोरोना वायरस को आने से रोकें। इस के साथ ही उन्होंने टीकाकरण की जानकारी दी।

दन्यां बाजार के संगठन की सदस्या पुष्पा जोशी ने बताया कि हर माह महिलाओं की गोष्ठी होती है। कोष जमा करते हैं। कोष से ऋण भी लेते है। कुछ समय पहले गाँव में एक आवारा बैल आ गया था। उसने सभी के खेतों में जाकर सब्जी नष्ट कर दी। संगठन की सभी महिलाओं ने सौ–सौ रुपया जमा कर के बैल को हटाया। इस तरह फसलें और सब्जियाँ बची रही। उन्होंने कहा कि संगठन ने मंदिर के चारों ओर सफाई की। गरीब लड़कियों की शादी में भी संगठन मदद करता है। अल्मोड़ा बाजार में आयोजित होने वाले होली के कार्यक्रम में भी संगठन की महिलाएं भाग लेती है। पुष्पा जोशी ने बताया कि उन्होंने पहले संस्था में आठ साल तक कार्य किया। वे संगठन को अत्यंत महत्वपूर्ण मानती हैं।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा की कार्यकर्त्ता अनुराधा ने सभी को महिला सम्मेलन की बधाई दी। उन्होंने बताया कि हर वर्ष दन्यां में सम्मेलन आठ मार्च को करते थे। इस वर्ष होली का पर्व हो जाने की वजह से पन्द्रह तारीख को यह आयोजन हुआ है। इस वर्ष काफी महिलाएं ग्राम प्रधान, पंच, क्षेत्र पंचायत सदस्या इत्यादि पदों पर आयी हैं। उन्हें बोलने में संकोच होता है। महिलाएं ब्लॉक की गोष्ठियों में अपनी बातें नहीं कह पाती हैं। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में ग्राम प्रधानों, पंचों, क्षेत्र पंचायत सदस्यों की गोष्ठी होगी। उसमें सभी प्रतिनिधि स्त्रियाँ भाग लें। एक दूसरे की बातें सुनकर जानकारी बढ़ती है। गाँव की खुली बैठकों तथा ब्लॉक की बैठकों में अगले पाँच साल के कार्यक्रम तय होते हैं। संगठनों की सदस्याएं और पंचायत प्रतिनिधि उसमें जरूर जायें और सीखें। अपने प्रस्ताव दें। अनुराधा ने पार्थ और चारू का परिचय दिया। ये दोनों छात्र मुम्बई से आये थे। उन्होंने बताया कि वे संस्थाओं व महिला संगठनों का कार्य देख कर खुद सीखेंगे और सुझाव भी देंगे।

पार्थ ने कहा कि उन्हें महिला सम्मेलन का कार्यक्रम काफी अच्छा लगा। महिलाएं संगठन के माध्यम से हर कार्य कर रही हैं। आगे बढ़ रही हैं। आटी गाँव में ढाबा भी देखा। यह प्रयास अनुकरणीय है। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के साथ मिलकर कार्य हो रहे हैं, यह एक अच्छा प्रयास है। चारू ने बताया कि उन्हें दन्यां संस्था में आकर अच्छा लगा। साथ में महिलाओं का कार्यक्रम सराहनीय है। वे फिर कभी दोबारा यहाँ आना चाहती है। गाँवों में जाना चाहती हैं।

अन्त में सम्मेलन की अध्यक्षा नन्दी देवी ने कार्यक्रम का समापन किया। महिलाओं ने चाय पी। मूंगफली और मिसरी का स्वाद लिया। इसी के साथ महिला सम्मेलन का समापन हुआ। सम्मेलन के आयोजन में संस्था की पूरी टीम का सहयोग रहा। महिला सम्मेलन में लगभग तीन सौ पचास लोगों ने भाग लिया।

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

निकिता डंगवाल

मैं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में जुलाई 2020 में जुड़ी। यहाँ आकर सबसे पहले काज बनाना सीखा। मशीन से जुड़ी जानकारियाँ भी प्राप्त की। उसके पुर्जों के नाम और उनके कार्यों के बारे में सीखा। जो मुझे पहले बिल्कुल भी नहीं आता था। उसके बाद हमने तुरपन करना सीखा। तुरपन और काज बनाने का अभ्यास हमने घर पर भी किया। जिससे इस कार्य में हम कुशल होने लगे।

काज व तुरपन सीखने के बाद मास्क बनाये। पहले मास्क का नमूना पुराने अखबारों में बनाया। तत्पश्चात् कपड़े पर कटिंग की, जिससे कपड़ा खराब न हो। कटिंग के बाद हमने मास्क को मशीन पर सिला और दो–दो मास्क सभी ने बनाये। एक अपने इस्तेमाल के लिए रखा। दूसरा मास्क सिलाई केन्द्र में जमा किया।

हमारे प्रशिक्षक का सिखाने का तरीका बहुत अच्छा है। एक बार सिखाने के बाद वे कई बार चीजों को दोबारा भी बताते हैं। उनका व्यवहार भी बहुत विनम्र है। वे रोज समय से केन्द्र में पहुँच जाते हैं। वे हर चीज को सरल से सरल तरीके से समझाते हैं। बीच–बीच में हमारी कॉपी भी जाँचते हैं।

मास्क बनाने के बाद हमने प्लाजो बनाना सीखा। सबसे पहले हमने पेपर पर कटिंग की। उसके बाद कपड़े पर कटिंग की और फिर सबने एक–एक प्लाजो बनाया। सभी साथियों ने घर पर भी अभ्यास किया। प्लाजो सीखने के बाद हमने चार कली वाली सलवार बनायी। उसके बाद सूट की कटिंग और सिलाई की। उसके बाद हमने ब्लाउज की कटिंग की। निरंतर अभ्यास किया और अन्य सब की मदद भी की।

जो भी कपड़े केन्द्र में बनाने सीखे, उनकी माप और सिलाई की विधि हमने कॉपी में लिखी। प्रशिक्षक के द्वारा बतायी गयी क्रियाविधि से हमें उसे पढ़कर समझने में सुविधा हुई। भविष्य में माप भूलने पर कॉपी से पढ़कर आसानी से समझ सकते हैं।

केन्द्र में पन्द्रह अगस्त के दिन अनेक गतिविधियाँ की गयीं। सभी ने देश–भक्ति के गीत गाये। भाषण और कविताएं प्रस्तुत कीं। मिष्ठान वितरित किया गया। प्रशिक्षक ने बच्चों को प्रोत्साहन के लिए पुरस्कार भी वितिरत किये। इस से सभी प्रतिभागियों को खुशी हुई।

महिला संगठन खल्ला

रेखा बिष्ट

चमोली जिले के गोपेश्वर कस्बे से तेरह किमी की दूरी पर खल्ला गाँव स्थित है। मंडल घाटी में स्थित माता अनुसूइया की गोद में बसा हुआ यह गाँव बहुत ही स्वच्छ है। गाँव के चारों ओर ऊँची–ऊँची चोटियाँ हैं। खल्ला गाँव हरे भरे बाँज, बुराँस, काफल के पेडों से घिरा हुआ है। गाँव से लगभग एक किमी की दूरी पर जड़ी–बूटी शोध एवं विकास संस्थान है। यह संस्थान स्थानीय काश्तकारों के लिये आजीविका का साधन भी है। खल्ला गाँव तथा कुछ अन्य गाँवों की स्थानीय गरीब महिलाएं और पुरूष जड़ी–बूटी संस्थान में काम कर के अपने परिवारों का भरण–पोषण करते है। गाँव के बीच में माता अनुसूइया का पौराणिक मन्दिर है। मन्दिर में सुबह–शाम पूजा होती है। शाम की पूजा में गाँव के बच्चे कीर्तन करते हैं।

खल्ला गाँव में महिला संगठन बहुत वर्षों से बना हुआ है। संगठन के माध्यम से गाँव में अनेक कार्य किए जाते हैं। जब खल्ला में महिला संगठन बना तो महिलाओं ने मिलकर एक निर्णय लिया। वे महिला संगठन के माध्यम से राष्ट्रीय पर्वों जैसे– 15 अगस्त व 26 जनवरी को ध्वजारोहण करेंगी। सभी महिलाओं की सहमति से यह कार्य आरम्भ किया गया। इसी क्रम में कई वर्षों से महिला संगठन द्वारा ध्वजारोहण किया जा रहा है। 15 अगस्त को सभी महिलाएं इकट्‌ठा होकर देश–भक्ति के गीत, नारों के साथ जय–जयकार करती हैं। ग्राम प्रधान या गाँव के बुजुर्ग ध्वजारोहण करते हैं। गाँव में वृक्षारोपण भी किया जाता है।

जब से गाँव में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा व नवज्योति महिला कल्याण संस्थान गोपेश्वर के सहयोग से ग्राम शिक्षण केन्द्र खुला, संगठन की सदस्याएं हर काम में बढ़–चढ़कर भाग लेने लगीं। पहले महिला संगठन तो बने थे पर महिलाएं गाँव में या अन्य जगहों पर खुलकर बातें नहीं कर पाती थीं। वे अपनी बातों को दबाकर आपस में सीमित रखती थी। जब से उत्तराखण्ड महिला परिषद् के माध्यम से महिला सम्मेलनों का आयोजन हुआ तब से महिलाएं अपने विचारों को खुलकर समाज में रख रही हैं। संगठन की सदस्याएं कार्यक्रमों में पूर्ण रूप से भागीदारी निभाती हैं।

क्षेत्र में शराबबन्दी के लिए महिलाएं आंदोलनरत रही हैं। 2016 में खल्ला के महिला संगठन ने भी एक सामूहिक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता करते हुए संगठन की अध्यक्षा ने सामाजिक कार्यो में शराब के बहिष्कार के लिये आवाज उठाई।

सभी महिलाओं ने एक स्वर में निर्णय लिया कि आज के बाद गाँव में शादी, मुंडन या किसी अन्य सामाजिक कार्य में शराब नहीं परोसी जायेगी। बैठक में लगभग सभी लोग उपस्थित थे। बुजुर्ग, युवक मंगल दल, महिला संगठन सब ने बैठक में बढ़–चढ़कर भाग लिया। जब महिलाओं ने शराब बन्द करने का मुद्दा उठाया तो कुछ लोगों की सहमति तो बनी पर कुछ लोगों ने कहा कि शराब को बन्द करना संगठन के बस में नहीं है। इस पर महिलाओं ने एकजुट होकर कहा कि जो भी सामाजिक कार्यों में शराब परोसेगा हम उनके काम में सहयोग नहीं देगें। तब बुजुर्गों ने भी राय दी कि शराब की वजह से क्षेत्र का माहौल खराब हो रहा है। नवयुवकों, बच्चों, सभी को शराब से बचाना है। उसके पश्चात् महिला संगठन ने जुर्माना लेने का निर्णय लिया। इस में सबकी सहमति रही। जिसके घर में शराब परोसी जायेगी उस से दस हजार रुपये का जुर्माना लिया जायेगा, यह कहा गया। इसके पश्चात् गाँव में जब शादियाँ या अन्य कार्य हुए तो लोग सतर्क हो गये। धीरे–धीरे क्षेत्र का माहौल अच्छा होने लगा। शादी–ब्याह और अन्य कार्यों में सभी मिलकर काम करते हैं। इस में महिला संगठन ने अपनी भागीदारी पूर्णरूप से निभायी।

आज संगठन इतना मजबूत है कि महिलाओं ने अपने कोष से बर्तन खरीदे हैं। ये बर्तन शादी–ब्याह और अन्य कार्यों में किराये पर दिये जाते हैं। इस से गरीब परिवारों को बर्तन बाहर से नहीं लाने पड़ते। जो बर्तन महिला संगठन ने खरीदे हैं, सभी ग्रामवासी उनका उपयोग करते हैं। इस के बदले महिला संगठन उनसे एक छोटी सी धनराशि लेती है। यह धनराशि संगठन के कोष में जमा की जाती है। इस धनराशि से आवश्यकतानुसार सामग्री एकत्रित की जाती है। संगठन का जो भी काम होता है उस के लिए सबसे पहले बैठक रखी जाती है। बैठक में सभी अपनी बात रखते हैं, इस से संगठन मजबूत होता जाता है।

सिलाई प्रशिक्षण

हिमानी चौहान

जाख गाँव बधाणी–कर्णप्रयाग में सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र फरवरी में खुला। बहुत से लोग इस सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र से जुड़े। उन्हीं में से मैं भी एक हूँ।

मैंने दिनाँक 23.08.2020 को सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में सिलाई सीखने का कार्य शुरू किया। हम सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में शाम को तीन बजे पहुँच जाते हैं, छुट्टी साढ़े चार–पाँच बजे तक होती है। सिलाई का कार्य हमें श्री देवेन्द्र सिंह बिष्ट सिखाते हैं। वह हमें बहुत अच्छे ढंग से सिलाई का कार्य सिखाते हैं। अगर हमें समझ में नहीं आता है तो वे बार–बार बताकर प्रयास करते हैं। वे केन्द्र से दो किमी की दूरी पर स्थित दियारकोट गाँव से समय पर पहुँच जाते हैं। हम सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में आकर सबसे पहले प्रार्थना करते हैं। इस से वातावरण शान्तिमय हो जाता है। इस से हमें कार्य करने में आनन्द आता है। प्रार्थना करने के बाद हम राष्ट्रगान बोलते हैं। इस के बाद हम सिलाई का कार्य शुरू करते हैं।

मैंने पहले पुराने कपड़े पर काज बनना सीखा। जब मुझे पूर्ण रूप से यह काम करना आ गया तो फिर तुरपन करना शुरू किया। हम हर दिन कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। गुरूजी ने सिलाई के साथ–साथ मशीन के हर भाग के बारे में भी विस्तार से बताया। मशीन के अलग–अलग पुर्जों जैसे हेण्डल, हत्था, सुई और सब्बल, काब, नथनी, चिमटी, अपर और लोअर बूट, बोबिन, डिब्बी, फुल्ली, क्लिप आदि के बारे में जानकारी दी।

काज बटन सीखने के बाद हम ने मास्क बनाना सीखा। मास्क सीखने के बाद गुरूजी ने सूट की कटिंग करना सिखाया। सूट की कटिंग कपड़े पर न करके पहले अखबार में की। इस से गलती होने पर हम दूसरे अखबार का प्रयोग कर सकते हैं। धीरे–धीरे अखबार पर कटिंग का अभ्यास करने के बाद मैंने कपड़े पर कटिंग की। मुझसे कोई गलती नहीं हुई। फिर गुरूजी ने हमें सूट सिलना सिखाया। गले की पट्टी सिलना सीखा। सूट की बाजू बनाना सीखा। इस तरह से सूट सिलना सीख गयी। सूट सिलने के बाद मैंने पटियाला सलवार की कटिंग सीखी। इसकी कटिंग भी पहले अखबार पर की। उस के बाद कपड़े पर कटिंग की। गुरूजी ने हमें पटियाला सलवार का नाड़ा स्वयं सिलना सिखाया। फिर पटियाला सलवार में बुकरम लगाना भी सिखाया। उस के बाद पैन्ट वाली सलवार सीखने की इच्छा हुई। इसकी कटिंग भी पहले अखबार पर ही की। हम यह काम बहुत अच्छी तरह से नहीं कर पाये क्योंकि

हमें सिलाई का कोई अनुभव तो है नहीं।

फिर मैंने ब्लाउज की कटिंग करना सीखा। गुरूजी ने ब्लाउज को सिलना सिखाया। मैंने प्रशिक्षण केन्द्र में इतना सिलाई का कार्य सीख लिया है। आगे कुछ और नया–नया सीखती रहूँगी।

यह सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र सभी ग्रामवासियों के लिए उपयोगी है। केन्द्र में कोई भी सिलाई का कार्य सीख सकता है इससे हमें अपने कपड़ों को सिलवाने के लिए बाहर नहीं देना पड़ेगा। सिलाई का कार्य सीखकर हमें बहुत लाभ हो सकता है। हम अपने कपड़ों को खुद सिल सकते हैं। इस के अलावा हम अपनी सिलाई की दुकान खोल सकते हैं। इस महामारी के चलते हमने अपना समय व्यर्थ न गंवाकर केन्द्र में सिलाई सीखने में उपयोग किया। मेरे विचार से यह एक सराहनीय पहल है।

रूद्रनाथ मन्दिर–एक साहसिक यात्रा

सुमन नेगी

उत्तराखण्ड के चमोली जिले में भगवान शिव का एक अलौकिक मन्दिर रूद्रनाथ धाम स्थित है। पंचकेदारों में से एक चतुर्थ केदार के नाम से प्रसिद्ध रूद्रनाथ का मन्दिर समुद्र तल से 2290 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह मन्दिर प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण है। यहाँ पर भगवान शिव के एकानन यानि मुख की पूजा की जाती है। माह जून 2020 में की गयी एक यात्रा का वर्णन प्रस्तुत कर रही हूँ।

चमोली जिले के मुख्यालय गोपेश्वर से करीब पाँच किमी की दूरी पर स्थित सगर गाँव से भगवान रूद्रनाथ के मन्दिर की पैदल यात्रा प्रारम्भ होती है। सगर से यह धाम बाइस किमी की दूरी पर है। सुबह साढ़े पाँच बजे हम गोपेश्वर से रूद्रनाथ के लिये चले। छः बजे सगर गाँव से यात्रा शुरू करके दुरूह चढ़ाई चढ़ते हुए चार किमी की दूरी पर स्थित बुग्याल (पुंग बुग्याल) में पहुँचे। यह घास का एक लंबा–चौड़ा मैदान है। यहाँ पर स्थानीय लोगों द्वारा कुछ झोपड़ियाँ बनायी गयी हैं। यहाँ पर कुछ देर विश्राम तथा नाश्ता करने के बाद हम आगे बढ़े। यहाँ से खड़ी चढ़ाई शुरू होती है। इस मार्ग में बाँज, बुराँस, खर्सू, मोरू, थुनेर आदि वृक्षों के साथ रास्ता तय करना होता है। घना जंगल होने के कारण यहाँ जंगली जानवरों और पक्षियों की आवाजें सुनायी दे रही थीं।

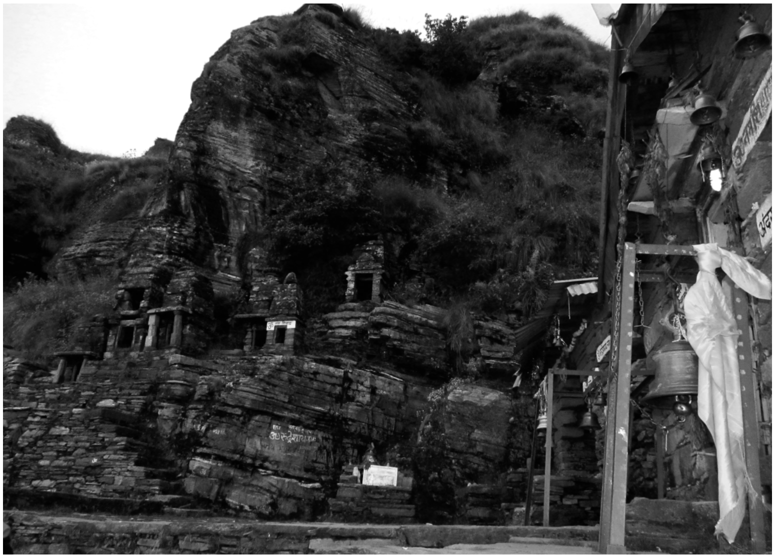

इस चढ़ाई को पार करने के बाद हम ल्वीटी बुग्याल पहुँचे। यहाँ से गोपेश्वर एवं सगर गाँव का बड़ा ही सुन्दर दृश्य दिखायी देता है। यहाँ पर ग्रीष्म ऋतु में आस–पास के बकरी चराने वाले पल्सी छः माह तक अपना डेरा डालते है। यहाँ से आगे चल कर एक मनमोहक

स्थान पनार बुग्याल आता है। यह रूद्रनाथ–धाम के मार्ग का मध्य द्वार है। यहाँ पर वृक्ष रेखा समाप्त हो जाती है। मखमली घास के मैदान शुरू हो जाते हैं। वर्षा ऋतु का प्रारम्भ होने के कारण हरी मखमली घास तथा रंग–बिरंगे फूल खिलने शुरू हो चुके थे। यहाँ पर स्थानीय लोगों द्वारा कुछ 'हट' (रहने के स्थान) तैयार किये गये हैं। यात्री ऊपर–नीचे आते हुए इस स्थान पर रात्रि विश्राम करते हैं। यह स्थान अत्यंत मनमोहक एवं प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है। पैदल चल रहे सभी लोग शरीर की थकान को पल–भर में भूल कर प्रकृति के सौंदर्य में खो जाते हैं।

कुछ देर विश्राम करने के बाद हम मार्ग में आगे बढ़े। तभी प्रकृति के सुन्दर नजारे के बीच मृगों का एक बड़ा सा झुंड देखने को मिला। आगे चल कर पितृ–धार पहुँचे। यहाँ पर यात्री अपने पूर्वजों की स्मृति में पत्थर रखते हैं। रूद्रनाथ की चढ़ाई यहाँ पर समाप्त हो जाती है। यहाँ से हल्की ढलान वाले रास्ते में चलना होता है। यहाँ पर वनदेवी का एक मन्दिर है। यात्री पूजा–अर्चना करके देवी के लिये श्रृंगार की सामग्री रखते हैं। रास्ते में अधिक बर्फ एवं शाम के समय बारिश होने से हमें यहाँ पर विश्राम करना पड़ा। एक छप्पर जो एक–दो दिन पहले ही बन कर तैयार हुआ था, आश्रय देने के लिए काफी था। यहाँ पर आस–पास काफी बर्फ पड़ी हुई थी। इस कारण हम आगे नहीं गये।

अगले दिन सुबह करीब छः बजे आगे की यात्रा पर निकले। यहाँ से आगे चल कर पंचगंगा में पहुँचते हैं। यात्रियों के विश्राम–हेतु यहाँ पर भी व्यवस्था है। पंचगंगा से आगे चलकर देवदर्शिनी से ही भगवान रूद्रनाथ के मन्दिर के दर्शन होते है। मन में उत्साह के साथ यात्री पल भर में ही मन्दिर के समीप पहुँच जाते हैं। मन्दिर में प्रवेश करने से पहले नारद–कुण्ड आता है। इस कुण्ड में स्नान करके यात्री अपनी थकान मिटाते हैं।

सुबह आठ बजे आरती के समय हम मन्दिर के प्रांगण में पहुँचे। भगवान शिव के दर्शन किये। रूद्रनाथ जी का यह मन्दिर विशाल प्राकृतिक गुफा में स्थित है। शिव की दुलर्भ पाषाण मूर्ति स्वंयभू यानि अपने आप प्रकट हुई है। इस गुफा की गहराई का पता नहीं चलता। मन्दिर के पास सरस्वती कुण्ड है। मन्दिर के एक ओर छोटे–छोटे देवस्थान बने हैं। इन्हें पाँच पांडवों के साथ कुन्ती तथा द्रोपदी एक साथ बताया गया है। रूद्रनाथ धाम का संपूर्ण परिवेश इतना अलौकिक है कि इस के सौंदर्य को शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता।

शीत ऋतु में भगवान रूद्रनाथ की गद्दी गोपेश्वर के गोपीनाथ मन्दिर में लायी जाती है। यहीं पर शीतकालीन पूजा–अर्चना की व्यवस्था रहती है। यूँ तो रूद्रनाथ के कपाट माह मई में खुलते हैं परन्तु अगस्त–सितम्बर के महीनों में यहाँ पर बुग्याल तथा रंग–बिरंगे फूल अपनी अनोखी छटा बिखेर कर संपूर्ण परिवेश को अलौकिक ऊष्मा से सरोबार कर देते हैं।

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

वन्दना नेगी

मैंने प्रशिक्षण केन्द्र के बारे में अपनी दोस्तों से सुना। उसके बाद विचार किया कि मैं भी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में जाऊँगी, सिलाई सीखूंगी। इस सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में कपड़ों को सिलना तथा कटिंग करना सिखाया जा रहा है।

सर्वप्रथम मैंने सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में काज बनाना और बटन लगाना सीखा। धीरे–धीरे मास्क तथा सूट–सलवार बनाना सीख लिया। अब ब्लाउज की कटिंग करना सीख रही हूँ। केन्द्र में जब हम सिलाई करने जाते हैं तो सर्वप्रथम प्रार्थना करते हैं। उसके बाद सब शान्त हो कर काम सीखते हैं।

इस सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र के बारे में हमने सभी साथियों को भी बताया। उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे भी हमारे साथ केन्द्र में आयें और सिलाई सीखें। हम केन्द्र में तीन बजे पहुँच जाते हैं। छुट्टी साढ़े चार बजे तक होती है। गुरूजी का नाम श्री देवेन्द्र सिंह बिष्ट है। वे हमारे पास के गाँव से आते हैं। उनका स्वभाव बहुत अच्छा है। इस कारण हम सिलाई आसानी से सीख जाते हैं। वह हमें बड़ी लगन से सिखाते हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र

राजेन्द्र बिष्ट

गणाई क्षेत्र में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा के सहयोग से वर्ष 2014 में ग्राम शिक्षण केन्द्र प्रारम्भ किये गये। इन केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य है बच्चों, विशेष तौर से छः से चौदह आयु वर्ग, के साथ शिक्षण का कार्य करना। गाँव में एक ऐसा केन्द्र स्थापित करना जहाँ बच्चे शिक्षण के अलग–अलग माध्यमों से सीख सकें। भाषा, गणित, पर्यावरण आदि विषयों पर अपनी रूचि के अनुसार रचनात्मक कार्य कर सकें। उन तमाम गतिविधियों को सीखें जो विद्यालयी शिक्षा के सीमित वादनों में नहीं कर पाते हैं। मसलन कहानी, कविता, नाटक, शैक्षिक भ्रमण, चित्रांकन, कागज, मिट्टी का कार्य जैसी गतिविधियाँ। शिक्षण केन्द्रों में अलग–अलग आयु–वर्ग एवं कक्षाओं के बच्चे आते हैं इसलिए उनके पास यह अवसर रहता है कि वे अपनी कक्षा से इतर नयी गतिविधियाँ सीख सकें।

ग्रामीण परिवेश में मुख्यतः पाठ्य–पुस्तकों के अध्ययन पर जोर दिया जाता है। बच्चों के पास भी पाठ्यक्रम से बाहर सोचने, सीखने के अवसर नहीं होते। न ही अभिभावकों की ओर से ऐसी पहल हो पाती है कि बच्चों को सीखने, समझने के नये–नये अवसर उपलब्ध करा सकें। ग्राम शिक्षण केन्द्र इन बच्चों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराते हैं। शिक्षण केन्द्रों के माध्यम से जहाँ बच्चे केन्द्र में अलग–अलग विषयों पर अध्ययन एवं चर्चाएं करते हैं, वहीं पढ़ने के लिए विविध विषयों से संबंधित किताबें उपलब्ध हैं। इन किताबों से बच्चों में पढ़ने के प्रति रूचि बढ़ती है। शब्द ज्ञान एवं व्याकरण की समझ के साथ ही चिंतन–मनन का दायरा भी बढ़ता है।

बच्चों के शिक्षण के साथ ही ग्राम शिक्षण केन्द्र समग्र गाँव को जोड़ने का माध्यम है। केन्द्र के माध्यम से किशोरियों, महिलाओं व गाँव के अन्य लोगों के साथ शिक्षण का कार्य किया जाता है। जहाँ किशोरियाँ और महिलाएं संगठन के माध्यम से जुड़ी रहती हैं, वहीं अन्य ग्रामवासी केन्द्र में उपलब्ध पुस्तकों व दैनिक समाचार पत्र के द्वारा जुड़ जाते हैं।

इन सब प्रयासों में कठिनाइयाँ भी हैं क्योंकि ग्रामीण समाज का शिक्षण एक तय व्यवस्था के तहत ही होता रहा है। किसी भी नवोदित प्रयास को उन्हीं व्यवस्थाओं और अनुभवों के नजरिये से देखा जाता है। तब न हम पुरानी व्यवस्था से बाहर सोच पाते हैं, न ही हमारे सामने कोई ऐसा उदाहरण आता है जिससे किसी नवोदित प्रयास को स्वीकार कर सकें। तब पाठ्य–पुस्तकों से हटकर अन्य किताबें पढ़ने, सीखने का प्रयास समय की बर्बादी लगने लगता है।

गाँवों में लोगों में पढ़ने की आदत नहीं के बराबर है। इससे बच्चों में भी नई किताबें पढ़ने, जानने की रूचि नहीं दिखाई देती। यही स्थिति युवाओं के बीच में भी है। कॉलेज में पढ़ने वाले अधिकतर छात्र–छात्राएं पत्रिका और किताब का अन्तर तक नहीं समझते। पाठ्यक्रम के अतिरिक्त दो–चार ऐसी किताबों के नाम नहीं बता पाते जो उन्होंने पढ़ी हों। गाँवों में इस कमी को कुछ हद तक दूर करने में ग्राम शिक्षण केन्द्र सहायक सिद्ध हुए हैं। बच्चे नई–नई किताबों से परिचित हुए है। साथ ही लोगों में पढ़ने के लिये रूचि बढ़ी है।

आज हम पाते हैं कि गाँव में पढ़ने वाला बच्चा अपने परिवेश से दूर होता जा रहा है। वह अपने आस–पास की चीजों को नहीं जानता। बच्चों में सामूहिक रूप से खेलने की प्रवृत्ति कम हो रही है। मोबाइल से खेलने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अच्छा वातावरण बच्चों को बहुत कुछ सिखाता है लेकिन बढ़ते नशे की प्रवृत्ति से सामाजिक पर्यावरण भी दूषित हो रहा है।

इन परिस्थितियों के बीच ग्राम शिक्षण केन्द्र की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षण केन्द्र के माध्यम से जहाँ बच्चों को अनेक नये अवसर मिल रहे हैं, वहीं गाँव का परिवेश बच्चों के अनुकूल बनाने की दिशा में भी काम हो रहा है। शिक्षण केन्द्रों से बच्चों की औपचारिक शिक्षा में सुधार आया है। यह विद्यालयों में अध्यापक एवं अध्यापिकाएं निरंतर कहते रहे हैं। साथ ही बच्चों को मौलिक रूप से सीखने, अपनी स्वाभाविक रूचियों को बढ़ाने, पढ़ने, सामुहिक रूप से खेलने, नई किताबें को पढ़ कर समझ बढ़ाने के अवसर मिल रहे हैं।

ग्राम समुदाय के साथ सतत संवाद स्थापित करने, बैठकों के माध्यम से सामुहिक चिन्तन को बढ़ाने का कार्य भी हो रहा है। ग्राम समुदाय संगठित हो कर गाँवों में सामुहिक कार्य कर रहे हैं। साथ ही गाँव के सामाजिक परिवेश को ठीक करने के लिये भी पहल कर रहे हैं। महिला संगठन नियमित बैठकें कर के अपनी समस्याओं का सामुहिक हल खोजने का प्रयास करते हैं। ग्राम–कोष में प्रतिमाह बचत कर के गाँव के सामुहिक उपयोग का सामान भी खरीद रहे हैं। बैठकों के माध्यम से महिलाओं को अभिव्यक्ति के नये–नये अवसर मिले हैं। महिलाएं अपनी बात को अन्य मंचों में रख रही हैं तथा संगठनों में सफल नेतृत्व कर रही हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र समग्र शिक्षण की दिशा में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

गाँव में काम–काज

लक्ष्मी नेगी

कोविड–19 के कारण लगे लॉकडाउन के बावजूद गाँवों में आजकल बहुत काम हो रहे हैं। कोरोना वायरस के कारण सभी को लॉकडाउन का पालन करना है। जो लोग बाहर से गाँव में वापस आ रहे हैं उनसे दूरी बनाये रखना, मास्क लगाना, हाथों को सेनिटाइज करना है। गाँव में आजकल काफल पक रहे हैं। सभी लोग काफल खा रहे हैं। ग्रामवासी जंगल से लकड़ी और गाय–भैंसों के लिए चारा–पत्ती ला रहे हैं। गाँव के आस–पास भालू घूम रहे हैं लेकिन खेतों में काम बदस्तूर जारी है। कोई गोबर जमा कर रहा है तो कोई खाद डाल रहा है।

आजकल गाँवों में कोरोना वायरस के बारे में शिक्षित किया जा रहा है। अपने आस–पास साफ–सफाई रखनी है, कूड़ा करकट नहीं फेंकना है। हर सप्ताह गाँव में सफाई हो रही है। जैसे पानी पीने की जगह जहाँ बहुत से लोग इकठ्ठा होते हैं, वहाँ पर लगातार सफाई की जा रही है। साथ ही, गाँव में मास्क, दवाइयाँ आदि सामान बँट रहा है। जगह–जगह कोरोना से बचाव के नारे लगाये जा रहे हैं। लोग शाम के समय गाँव की सड़कों में घूमने जाते हैं। आजकल खुबानी, प्लम बहुत ही स्वादिस्ट हो रहे हैं। ग्रामवासी जंगलों से लकड़ी ला कर जाड़ों के लिए जमा कर रहे हैं। चूल्हे की पुताई के लिए मिट्टी भी ला रहे है। लॉकडाउन में जिनका कोई नहीं है उन्हें विशेषरूप से राशन, दवाइयाँ, मास्क आदि मिले हैं।

खेतों में आजकल बहुत काम हो रहे हैं। साटी की मड़ाई का काम है। लोग सरा और रेसवोण ला रहे हैं। ग्रामवासियों ने सब्जियाँ जैसे आलू, प्याज, मूली आदि उगायी है। इसके बाद खेतों में मिर्च, टमाटर–भट्ट आदि बोये जायेंगे। उसमें रोज पानी डालना होता है। कुछ प्रवासी बंजर खेतों को खोद कर बीज बो रहे हैं। हम इन सब कार्यों में माँ का हाथ बँटाते हैं। जब माँ थक जाती है तो हम गौशाला से दूध ला कर गाय को घास दे देते हैं। गोबर भी निकालते हैं। फिर रोटी बनाते हैं। साथ ही, टी.वी. देखते हैं और किताबें पढ़ते हैं।

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

पल्लवी गैरोला

मैं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में जुलाई 2020 में जुड़ी। यहाँ आकर सबसे पहले मैंने काज बनाना सीखा। यहाँ आने से पहले मुझे बिल्कुल भी सिलाई का काम नहीं आता था। उसके बाद हमने तुरपन करना सीखा। काज और तुरपन का अभ्यास हमने घर पर भी किया। इस तरह मैं इस कार्य में कुशल हो गयी। मैंने केन्द्र में अन्य लोगों की मदद भी की।

इसके बाद हमने मशीन के बारे में सीखा। यह काम हम चार–पाँच दिन तक करते रहे। मशीन के बारे में सीखने के बाद मैंने दूसरों को भी सिखाया। इसके बाद मास्क बनाना सीखा। फिर मास्टर जी ने प्लाजो बनाना सिखाया। यह काम मुझे पहले बिल्कुल भी नहीं आता था। मैंने घर पर प्लाजो बनाये। प्लाजो के बारे में कॉपी में भी लिखा। फिर मास्टर जी ने हमें चार कली वाला सलवार काटना और सिलना सिखाया। हमने पहले अखबार पर कटिंग की। उसके बाद कपड़े पर कटिंग की। चार–पाँच दिन तक इसका अभ्यास किया। तत्पश्चात् सूट सिलना सीखा। मैंने घर पर अभ्यास किया। आजकल हम ब्लाउज सिलना सीख रहे हैं। ये सभी कपड़े बनाना मुझे बहुत अच्छा लगा।

हमारे प्रशिक्षक का नाम श्री देवेन्द्र सिंह बिष्ट है। उनका सिलाई करने का अनुभव बहुत ज्यादा है। उनका व्यवहार भी अच्छा है। वह हमेशा हर एक चीज लगन से बताते हैं। हमें कभी मारते नहीं हैं। वह हमेशा समय पर केन्द्र में आते हैं। कभी–कभी जब उनका काम रहता है तो वह देर से आते हैं, हमें काम दे देते हैं। जब वह कुछ भी बताते हैं तो जल्दी ही समझ में आ जाता है। वह हमें कोई भी नया कपड़ा पहले अखबार पर काटना सिखाते हैं। इस वजह से वे हमें अच्छे लगते हैं।

हमारे सिलाई केन्द्र में 15 अगस्त भी मनाया जाता है। 15 अगस्त को बहुत सी गतिविधियाँ होती है। जैसे कि नृत्य, भाषण प्रतियोगिताएं, चेतना गीत आदि। इस दिन बच्चों का खूब मनोरंजन होता है। कार्यक्रम के समापन पर सभी अतिथि मुँह मीठा करते हैं।